सुधा बीज बोने से पहले, काल कूट पीना होगा।
पहन मौत का मुकुट विश्व-हित, मानव को जीना होगा॥

भाग ४] १ जनवरी सन् १९४३ [अङ्क १

अकेला

[श्री० स्वामी सत्यभक्तजी महाराज]

कौन है किसका यहां पर, हैं सभी आते अकेले।
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
मोह के बन्धन न पड़ तू, कौन अपना या पराया ?
कर भला फिर भूल जग को, छोड़ दे सब मोह माया॥
जग तुझे समझे न समझे, कर नहीं पर्वाह इसकी।
चार दिन की वाह वाही, कर नहीं तू चाह इसकी॥
मस्त रह ! बस मस्त रह ! अपनी फ़क़ीरी शान में तू।
यश अपयश निन्दा प्रशंसा, रख नहीं कुछ ध्यान में तू॥
सत्य प्रभु का ध्यान रख बस, छोड़ दे सारी निराशा।
क्या अकेला, क्या दुकेला, साथ है जब अमर आशा।
दस कदम के साथियों का, योग और वियोग क्या रे ?
भक्त तू भगवान का, फिर व्यर्थ चिन्ता रोग क्या रे ?
देख तू सत्येश मन्दिर विश्व का कल्याण जिसमें।
विश्व की सेवा जहाँ है और तेरा त्राण जिसमें॥
उस तरफ ही बढ़ वहीं है, प्राण का आधार तेरा।
तू अकेला है यहां पर, है वहाँ संसार तेरा॥

उतर स्वर्ग से भूमण्डल पर 'सत्' की अमरज्योति आती है।
वेणु बजाती सत्य-प्रेम की, सुमधुर न्याय गान गाती है॥

मथुरा, १ जनवरी सन् १९४३ ई०

वर्तमान संकट और हमारा कर्तव्य।

वर्तमान काल में मनुष्य जाति पर जो विपत्तियाँ आई हैं, उनके तात्कालिक कारण अलग-अलग दिखाई पड़ते हैं, परन्तु इन सब के मूल में एक ही कारण काम कर रहा है वह यह है 'धर्म के प्रति उपेक्षा' आत्मा का स्वाभाविक धर्म यह है कि सेवा बुद्धि से लोक कल्याणार्थ कर्तव्य करे। सब भूतों में ईश्वर की भावना रख कर उनकी क्रियात्मक पूजा करना, प्रेम, सहायता, सहयोग, करना सच्चा धर्म है। ईश्वर भक्ति का और धर्म पालन का एक ही सच्चा मार्ग है और वह यह कि अन्य प्राणियों के उत्थान के निमित्त निजी स्वार्थों का त्याग किया जाय। दया, उदारता, भ्रातृभाव, त्याग, सेवा, सहायता की उपकारी सद्भावनायें धर्म के प्रत्यक्ष चिन्ह हैं। अपने लिए कम लेने और दूसरों को अधिक देने का स्वभाव धर्मात्मा होने का प्रधान लक्षण है। इस सत्य धर्म को लोगों ने त्याग दिया और जैसे भी बने वैसे नीति या अनीति से दूसरों की वस्तु को अपहरण करके अपनी भोगेच्छाओं को पूरा करने की प्रथा को अपना लिया। अपहरण को पाप और सेवा को पुण्य कहा जाता है। लेने की इच्छा को मोह, देने की इच्छा को प्रेम, कहा जाता है। आत्मा को लोभ में गराने को असत्य और भोग छोड़ कर तप करने को सत्य बताया गया है। शक्ति को सहायता में लगाना न्याय, और संचय एवं परपीड़न में लगाना अन्याय कहा गया है। हम दृष्टि पसार कर देखते हैं, कि संसार में धर्म को, पुण्य को, सत्य को, प्रेम को, न्याय को, लोगों ने छोड़ दिया है और उसके स्थान पर अधर्म, पाप, असत्य, मोह एवं अन्याय को गर्व पूर्वक अपनाये फिर रहे हैं। एक दूसरे को लूटने की तरकीबें सोचने में व्यस्त हैं। एक भेड़िया दूसरे भेड़िये का मांस नोंच खाने के लिए अपने तीक्ष्ण दाँतों को और भी तेज करने में, मजबूत करने में, लगा हुआ है। ऐसी भावनायें जब उग्ररूप धारण करके सर्वत्र फैल रही हैं तो उसका यह एक ही परिणाम होना संभव है, कि सारी मनुष्य जाति घोर विपत्तियों के दलदल में फँस जाय। वह परिणाम हमारे सामने उपस्थित है। हम लोग नाना प्रकार की आधि व्याधियों में पड़े हुए कराह रहे हैं।

चतुरंगिणी सेनाऐं शत्रुओं का संहार करने के लिये कूच कर रही हैं, रोगों को मिटा देने के लिए वैज्ञानिकों की प्रयोग शालायें बड़े-बड़े अनुसन्धान कर रही हैं, आर्थिक कष्टों को मिटाने के लिए अर्थ शास्त्री प्रयत्नशील हैं, राजनैतिक समस्याओं का हल ढूँढ़ने के लिए बड़े-बड़े राजनैतिज्ञ दिमाग़ लगे हुए हैं। वे लोग अपने महत्व पूर्ण कार्यों में बड़े परिश्रम और जाँ फिसानी के साथ लगे हुए हैं। कर्तव्य निष्ठा सराहनीय वस्तु है। जो लोग वर्तमान महा विपत्तियों का समाधान करने के लिए कार्य कर रहे हैं, वे सचमुच प्रशंसा के पात्र हैं। आग लगने पर उसे बुझाने का प्रयत्न करना हर एक विचार शक्ति रखने वाले का परम पवित्र कर्तव्य है। हिन्दू धर्म शास्त्रों की ऐसी आज्ञा है कि सामूहिक आपत्ति को निवारण करने में हर एक मनुष्य को सहयोग देना चाहिए, अन्यथा घोर पाप का भागी होना पड़ता है। कहीं आग लगनेपर जो बालक, रोगी या असमर्थ उसे बुझाने के लिए जाने में समर्थ नहीं होते उन्हें पांच कदम उस दिशा में चल कर पांच मुट्ठी रेत

और एक लोटा पानी फैला कर प्रायश्चित्य कर लेने का विधान है। आज संसार में आग लग रही है, जिसकी ज्वाला में देश के देश और परिवार के परिवार जले जा रहे हैं, इस अग्नि को बुझाने में जो लोग आना-कानी करते हैं, अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते, वे निस्सन्देह एक महान् पाप के भागी होते हुए अपने लिए घोर रौरव नरक का निर्माण करेंगे।

भौतिक और शारीरिक दृष्टि से किसे क्या करना चाहिए, इस पर हम अधिक प्रकाश नहीं डालेंगे, क्योंकि अनेक सूत्रों से उन कर्तव्यों की जानकारी पाठकों को प्राप्त होती रहती है। हमें तो उस मूल कारण के सम्बन्ध में कुछ कहना है, जिसके कारण यह सारी विपत्तियाँ उत्पन्न हुई हैं। तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भौतिक उपकरण प्रयोग होते हैं। पर स्थायी शान्ति के लिए उन आध्यात्मिक शस्त्रों की आवश्यकता है, जिनसे अधर्म की सारी किलेबन्दी को ढहा कर विस्मार कर दिया जाय।

अखण्ड-ज्योति के पाठकों से हम विशेष रूप से अनुरोध करते हैं कि वे सच्चे धर्म को फैलाने में पूरी शक्ति के साथ प्रयत्न करें। सब से पहला काम हम में से हर एक को यह करना चाहिये, कि अपना आत्म-शोधन करें अपने अन्दर जो स्वार्थ, असत्य, अन्याय की दुर्भावनायें घुसी बैठी हों उन्हें बारीकी से साथ तलाश करें और जिस प्रकार मरे हुए कुत्ते की लाश को निकाल कर घर से बाहर फेंक देते हैं, वैसे ही अपनी कुभावना, अनीति और स्वार्थ परता को दूर फेंक देने का यथा सम्भव उद्योग करें। अमुक मन्त्र की माला जपने, अमुक पुस्तक का पाठ करने अमुक देवता के भगत बनने, अमुक नदी नाले में नहाने के महजबी कर्म काण्डों को करने न करने के सम्बन्ध में हमें कुछ नहीं कहना, यह सब व्यक्तिगत रुचि और श्रद्धा की वस्तुऐं हैं, हमें तो जोरदार शब्दों में यह कहना कि आप सत्य आचरण करने के लिए तत्पर होजाइये दूसरों से निस्वार्थ प्रेम कीजिए, अन्य लोगों की भलाई में अपनी भलाई समझिए। ज्ञान, बल, धन, वैभव प्राप्त कीजिए, किन्तु उसको अपने भोगों का साधन मत बनाइये। अपने से अल्प शक्ति रखने वालों की सहायता में आपकी सम्पूर्ण शक्तियों का अधिक से अधिक व्यय होना चाहिए। मैं किसकी क्या भलाई कर सकता हूं, यह सोचते रहा कीजिए और परोपकार के सेवा, सहायता के अवसर आवें उन्हें बिना चूके कर्तव्य परायण हुआ कीजिए। आपका शारीरिक मानसिक और भौतिक बल अधिक से अधिक मात्रा में लोक कल्याण के निमित्त, सत् वृत्तियों की उन्नति के निमित्त, पाप कर्मों को नाश करने के निमित्त, व्यय होना चाहिए। आपका जीवन कर्मयोग में परिपूर्ण यज्ञमय बन जाना चाहिए, जिसका प्रत्येक क्षण विशुद्ध कर्तव्य पालन में, धर्म और ईश्वर की उपासना में व्यय होने लगे। यह कार्य कठिन दिखाई पड़ता है, परन्तु यदि आप प्रतिज्ञा करलें, कि मुझे अपना जीवन सत्य मय बनाना है तो विश्वास रखिए, आज से ही आपके कदम उस दिशा को बढ़ाने लगेंगे और कुछ ही दिनों में बड़ी भारी सफलता दृष्टिगोचर होने लगेगी।

दूसरा कार्य जो उपरोक्त आत्म सुधार कार्य से ही घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है यह है, कि जिन लोगों तक आपकी पहुंच हो सकती है, उनको धर्म मार्ग पर चलने के लिए, सत्य का आचरण करने के लिए प्रेरित करते रहा करें। जो लोग आपके संपर्क में आवें, जिनसे बात करने का अवसर मिले, जिनसे पत्रालाप हो उन्हें सदुपदेश दिया कीजिए, सत्य के, प्रेम के, न्याय के, मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया कीजिए। अपने मुखको एक प्रकार का जीवित धर्म शास्त्र बना डालिए, जिसमें से सदैव धर्म शिक्षा का प्रसार होता रहे। अपने कुटुम्बियों, मित्रों, सहयोगियों, सम्बन्धियों, परिचितों अपरिचितों के

सचाई और ईमानदारी के ढाँचे में ढालने का उद्योग किया कीजिए, जिससे उनकी जीवन दिशा सुधरे और आपका अपना आत्म-सुधार का अभ्यास मजबूत होता रहे। यह बेल बढ़ेगी। मान लीजिए आप दस आदमियों को धर्ममय विचारों का बना देते हैं, वे दस और दस-दस को सुधारते हैं, तो सौ होगये। ऐसा ही सौ करें तो दस हजार हो जाँयगे, यही बेल आगे बढ़े तो दसवें व्यक्ति पर जाकर यह संख्या इतनी हो सकती है, जितने मनुष्य इस सारी पृथ्वी पर नहीं हैं। यदि सौ दृढ़ प्रतिज्ञ सुयोग्य व्यक्ति धर्म भावनाओं का प्रचार करने के लिए सच्चे हृदय से तत्पर हो जावें, तो संसार की काया पलट कर सकते हैं, युद्ध का जरा मूल से अन्त कर सकते हैं, कुछ ही समय भी इस पृथ्वी को सुर-पुरी बना सकते हैं। भागीरथ की तपस्या की पतित पावनी भगवती गङ्गाजी स्वर्ग से भूमण्डल पर उतर आई थी। आज ऐसे ही भागीरथों की आवश्यकता है, जो स्वयं घोर तप करके सतयुग गङ्गा को पृथ्वी पर लावें और जलते हुए संसार पर अमृत की वर्षा करके इसे नन्दन बन के समान हरा-भरा करदें।

वर्तमान दारुण परिस्थितियों में हम अपने हरएक पाठक से आग्रह पूर्वक अनुरोध करते हैं, कि अपने निजी जीवन को पवित्र, पुण्यमय, परमार्थी बनावें और दूसरों को भी इस मार्ग पर प्रवृत्त करें। इस धर्म प्रचार यज्ञ से संसार पर आई हुई आपत्तियों को हटाने में महत्व पूर्ण सहायता मिलेगी, ऐसा हमारा सुदृढ़ विश्वास है।

शैतान दो बार हँसता है, एक तो तब, जब कि मृत्यु के निकट पहुंचे हुए मनुष्य को डाक्टर कहे कि मैं अच्छा कर दूँगा और एक तब, जब कि सहोदर भाई जमीन नापते हैं, कि यह मेरी है, यह तेरी है।

\+ \+ \+

क्रोध मत करो!

(ऋषि तिरुवल्लुवर)

आग उसे जलाती है, जो उसके पास जाता है, पर क्रोध तो सारे कुटुम्ब को जलाता है। यदि तुम जमीन पर हाथ पटको तो पहले तुम्हें ही चोट लगेगी, क्रोधी दूसरों का नुकसान पीछे करता है, पहले अपने को आहत कर लेता है। क्रोध करने की आदत डालना ऐसा है, जैसा विषधर सर्प को पालन करना, वह किसी भी क्षण सर्वनाश उपस्थित कर सकता है। कोई तुम्हें कितना ही भड़का रहा हो और क्रोध दिला रहा हो पर तुम उससे पीछे ही हटते जाओ क्योंकि क्रोध से सैकड़ों अनिष्ट उत्पन्न होते हैं जलते हुए लोहे के समीप जाकर उस पर पैर रखने से तो यही अच्छा है, कि दूर रहो और उसे मत छुओ। क्रोध जीवन के सारे आनन्द स्रोतों को सुखा डालता है, इससे बढ़कर मनुष्य जाति का और कोई शत्रु नहीं हो सकता। यदि तुम में बल हो और विरोधी से बदला लेने की योग्यता हो तो भी उसे माफ करो, क्योंकि क्रोध करना तो बहुत ही बुरा है। यदि तुम क्रोध का परित्याग करदो और जो कुछ कहना चाहते हो शान्ति पूर्वक कहो तो उन समस्याओं का आधा हल तो अपने आप होजायगा, जिनके लिए तुम बेचैन हो।

इसमें क्या बड़प्पन है कि तुम बुराई करने वाले से बदला लेलो। ऐसा तो चींटी भी कर सकती है। बड़ा वह है जो अपने शत्रुओं को क्षमा कर देता है। धरती को देखो, तुम उसे खोदते हो और वह बदले में अन्न उपजाती है। गन्ने को दबवाते हैं तो उसमें से मीठा रस टपकता है। जिसने तुम्हें हानि पहुँचाई वह बेचारा कमजोर है, कायर है, क्योंकि निर्बल आत्मा वाले ही दूसरों को हानि पहुंचाते हैं। माफ करदो इन गरीबों को, अन्धों पर तलवार चलाना कोई बहादुरी थोड़ी है। बदला लेने पर तुम्हें कुछ घंटे खुशी रह सकती है, पर क्षमा कर देने पर जो आनंद प्राप्त होगा वह बहुत काल तक कायम रहेगा।

वर्तमान दुर्दशा क्यों ?

आज हम चारों ओर भयंकर दावानल सुलगती हुई देखते हैं। महायुद्ध का दानव लाखों मनुष्यों को अपनी कराल दाढ़ों के नीचे कुचल कुचल कर चबाने जारहा है। खून से पृथ्वी लाल होरही है। आकाश से ऐसी अग्नि वर्षा होरही है जिससे सहस्रों निरपराध प्राणी अकारण ही चबैने की तरह जल-भुन रहे हैं। कराह और चीत्कारों से सारा आकाश मंडल गुंजित हो उठा है। नन्हे नन्हें बालक अपने माता पिताओं के लिए बिलख रहे हैं। मातायें अपने पुत्रों के लिए और पत्नियाँ अपने पतियों के लिए अश्रुपात कर रहीं हैं। कितने घरों में, किस प्रकार करुण क्रन्दन हो रहे हैं, इन मर्म कथाओं को यदि प्रत्यक्ष रूप से प्रकट किया जाय तो वज्र का भी कलेजा फटने लगेगा।

अकेला युद्ध ही क्यों महामारियों का प्रचंड प्रकोप आप देखिए। अनेक प्रकार के नये नये अश्रुत पूर्व रोग उठ खड़े हुए हैं। चिकित्सा करने वाले परेशान हैं, उपचार हतवीर्य साबित होते हैं, अर्धमृत या मृत लाशों के ढेर घर एवं मरघटों में आसानी से देखे जा सकते हैं। रोगी और उनकी परिचर्या करने वाले सभी की बेचैनी बढ़ती चली जारही है। जीवन भार बने हुए हैं, जो सांसें बीत रही हैं वह भारी और कष्ट कर प्रतीत होती हैं। दवा के लिए पैसा नहीं, पथ्य के लिए पैसा नहीं, असहायावस्था में पड़े हुए लोग बेबसी के आंसू घूंट रहे हैं।

मँहगी का तो कुछ कहना ही नहीं, हर चीज़ पर चौगुने अठगुने दाम बढ़ते जारहे हैं। पैसा खर्च करने पर भी वस्तुएं प्राप्त होती नहीं। अच्छा अन्न नसीब नहीं, खाद्य पदार्थों का लोप होता जाता है। व्यापार चौपट होरहे हैं, उद्योग धंधे बढ़ते नहीं, बेकारी में कमी नहीं होती खर्च बढ़ रहे हैं पर आमदनी नहीं बढ़ती आधे पेट खाने वालों और आधे अन्न टकने वालों की संख्या बढ़ती जारही है। जीतोड़ परिश्रम करने पर भी भोजन वस्त्र की आवश्यकताऐं पूरी नहीं हो पातीं। कुछ अमीरों या युद्ध संबंधी कोई व्यवसाय प्राप्त कर लेने वाले भाग्यवानों की बात अलग है, किन्तु साधारण जनता की जीवन निर्वाह समस्या दिन दिन गिरती चली जारही है, तिल तिल करके अभावों की ज्वाला में लोगों को झुलसना पड़ रहा है।

आये दिन जो अज्ञात् विपत्तियाँ सामने आती रहती हैं उनकी भयंकरता भी कम नहीं। राजनैतिक संघर्षों के कारण जनता के कष्टों में वृद्धि होती है, कोई उपद्रव करता है दंड किसी को सहना पड़ता है। निर्दोष व्यक्ति का भी कलेजा कांपता रहता है कि कहीं अकारण ही कोई चपेट मुझे न लग जाय। दैवी प्रकोप का भी पूरा जोर है। इस साल नदियों में बड़ी भारी बाढ़ें आईं जिससे हजारों गाँव का नुकसान हुआ लाखों बीघा कृषि नष्ट होगई, अति वृष्टि, अनावृष्टि, भूचाल, तूफान, अंधड़ के कारण बहुत भारी क्षति उठानी पड़ी। गुण्डे बदमाशों का जोर बढ़ने से आये दिन अपराध बढ़ते रहते हैं। आज का दिन किसी प्रकार कट गया हो कल के लिए आशंका बनी रहती है कि कहीं कोई नई बिपत्ति न टूट पड़े। शान्ति, स्थिरता, संतोष में कमी होती जाती है और बेचैनी बढ़ती जाती है।

यदि सब कठिनाइयों, कष्टों, व आपत्तियों और आशंकाओं को मिलाकर देखा जाय तो लगता है कि मनुष्य जाति अपने को बड़ा दुखी और व्यथित अनुभव कर रही है। किन्हीं किन्हीं प्रदेशों पर कभी कभी कुछ आपत्तियाँ आते रहने के उदाहरण इतिहास में प्राप्त होते हैं परन्तु ऐसे अवसर बहुत ही कम आये हैं जब समस्त संसार पर एक बारगी इतनी बड़ी चतुर्मुखी विपत्ति आई हो। आज तो युद्ध में लगे हुए और बिना लगे हुए सभी देशों की जनता को विविधि प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। समस्त विश्व में एक साथ ऐसी विपित्ति क्यों आई ? आइए, इसके संबंध में कुछ विचार विनियय करें:—

वर्तमान कष्टों के कारणों की विवेचना करते हुए हम देखते हैं कि भौतिक विज्ञान की उन्नति ने रेल, तार, रेडियो, गैस, जलयान, वायुयान आदि की सहायता से समस्त

संसार को एक सूत्र में बांध दिया है । इन साधनों की सहायता से सारी मनुष्य जाति आपस में बहुत अधिक संबंधित होगई है। व्यापारिक दृष्टि से एक देश दूसरे देशों पर बहुत कुछ निर्भर करता है। अब शारीरिक और मानसिक खुराकें प्राप्त करने के लिए अन्य देश वासियों के सहयोग की भी आवश्यकता अपेक्षित होती है । अब नेताओं को केवल देश की आन्तरिक समस्याओं को ही हल नहीं करना पड़ता वरन् अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को भी उतना ही महत्व देना पड़ता है। इस प्रकार मानव परिवार का दायरा अधिक विस्तृत होगया है और साथ ही एक देश की जनता के भले बुरे आचरण की जिम्मेदारी दूसरे देशों पर भी आगई है ! अक्सर अमेरिका के बुद्धिमान लोग ऐसा कहा करते हैं कि भारत की समस्या मित्र राष्ट्रों की समस्या है। भारत की अवनति का दोष इंग्लैण्ड को दिया जाया करता है। धुरी राष्ट्रों द्वारा पराधीन बनाये गये देशों को स्वतंत्रता दिलाने का आश्वासन मित्र राष्ट्र देरहे हैं। यह सब उदाहरण यह बताते हैं कि अब कोई देश केवल अपनी ही सीमा तक कर्तव्य बद्ध नहीं है वरन् उसकी जिम्मेदारी का दायरा बढ़ कर अन्तर्राष्ट्रीय होगया है।

यह एक तथ्य है कि किसी व्यक्ति द्वारा किये हुए भले या बुरे कर्म का कुछ भाग उस परिवार के अन्य व्यक्तियों को भी मिलता है। घर का एक व्यक्ति कोई भला काम करे तो उस परिवार के सब लोग अभिमान अनुभव करते हैं और आदर पाते हैं। यदि घर का एक व्यक्ति बुरा काम करता है तो सारे कुटुम्ब को लज्जित होना पड़ता है। एक समय ब्राह्मण लोगों ने बड़े उत्तम ज्ञान का प्रसार करके जनता की सेवा की थी । उनकी सैकड़ों पीढ़ी के बाद भी आज ब्राह्मणों के गुणों से हीन होने पर भी उनका आदर होता है और वे अभिमान पूर्वक ऋषि मुनियों की संतान कह कर अपना गौरव प्रकट करते हैं। ऋषियों का शरीर छूटे हजारों वर्ष होगये तो भी उनकी संतान उन पूर्वजों के पुण्य का फल, दान दक्षिणा के रूप में अब तक भोग रही है । बुरे कर्म करने वालों के कुटुम्बियों और बंशजों को भी इसी प्रकार लज्जित होना पड़ता है। भारत में कुछ कौमें "जरायम पेशा" लिखी जाती हैं। इन कौमों के लोग चोरी आदि अपराध करते हैं। उनमें से जो अपराध नहीं करते वे भी "जरायम पेशा" समझे जाते हैं और पुलिस की निगरानी उन पर भी रहती है। सम्मिलित रहने वालों की सम्मिलित ज़िम्मेदारी भी होती है। वे आपस में एक दूसरे के पाप पुण्य के भागीदार भी होते हैं ।

आजकल समस्त संसार पर जो चतुमुर्खी आपत्तियां आई हुई हैं उसका कारण भी यही सम्मिलित जिम्मेदारी है। पूर्वकाल में परिवारों के दायरे छोटे थे इसलिए वह विपत्तियाँ भी थोड़े ही पैमाने पर आती थीं। अब सारी दुनियाँ एक सूत्र में बँधी है तो उसका यह कर्तव्य भी बढ़ गया है कि समस्त देशों में धर्म की वृद्धि और अधर्म का निवारण करने का प्रयत्न करे।

भारतीय शास्त्र चिल्ला चिल्ला कर बताते हैं कि आपत्तियों का कारण अधर्म है। हम देखते हैं कि पिछली शताब्दियों में नैतिकता का स्तर जितना नीचा घटा है उतना सृष्टि के आदि से लेकर पहले कभी नहीं घटा था। इन दिनों बुद्धिबल से, यान्त्रिक शक्ति से, छल प्रबंध से, स्वार्थ साधना का ही विशेष ध्यान रखा गया। लूट खसोट की प्रधानता रही। पहले शत्रु के लिए भी उसके चरित्र को नष्ट करने के षडयंत्र नहीं रचे जाते थे पर इस युग में निर्बल शक्ति वालों को नैतिकता से भी गिरा देने का बुद्धिमान लोगों ने प्रयत्न किया, ताकि वे लोग असत् आचरण के कारण क्लेश, कलह, अशान्ति एवं कुविचारों में उलझे रहें और हमें लूट खसोट का अच्छा अवसर हाथ लगता रहे। जब मनुष्यों के मन में सद्वृत्तियाँ रहती हैं तो उनकी सुगंध से दिव्यलोक भरा पूरा रहता है और जैसे यज्ञ की सुगंधि से अच्छी वर्षा, अच्छी अन्नोत्पत्ति होती है वैसे ही जनता की सत् भावनाओं के फलस्वरूप ईश्वरी कृपा की—सुख शान्ति की—वर्षा होती है । यदि लोगों

के हृदय कपट, पाखंड, द्वेष, छल आदि दुर्भावों से भरे रहें तो उससे अदृश्यलोक एक प्रकार की आध्यात्मिक दुर्गन्ध से भर जाते हैं जैसे वायु के दूषित,दुर्गन्धित होने से हैजा आदि बीमारियाँ फैलती हैं वैसे ही पाप वृत्तियों के कारण सूक्ष्म लोकों का वातावरण गंदा हो जाने से युद्ध, महाभारी, दारिद्र, अर्थ संकट, दैवी प्रकोप आदि उपद्रवों का आविर्भाव होता है। संसार की सुख शान्ति इस बात के ऊपर निर्भर है कि प्रेम, दया, सहानुभूति, उदारता और न्याय का व्यवहार अन्य लोगों के साथ किया जावे, जब इस प्रकार के विचार और व्यवहार की अधिकता होती है तो संसार में ईश्वरीय कृपा के सुन्दर आनन्ददायक परिणाम दिखाई पड़ते हैं सब लोग सुख शान्ति के साथ प्रफुल्लतामय जीवन बिताते हैं, किन्तु जब स्वार्थ लिप्सा में अन्धे होकर मनुष्य एक दूसरे को नोच खाने के प्रयत्न करते हैं तो उसके दुर्गंधित धुँए से सबका दम घुटने लगता है। बिपित्ति, आपदा और कष्टों के पहाड़ चारों ओर से टूटने लगते हैं। दुख दारिद्र का नंगा नाच होने लगता है।

वर्तमान समय की चतुर्मुखी दुर्दशा का एक ही कारण "नैतिकता का पतन होजाना" है। मन की वृत्तियों का स्वार्थ प्रधान होजाना ही पाप है। यह पाप पिछली एक शताब्दी से तो बहुत अधिक मात्रा में बढ़ गया है। सच्चे धर्म, का हृदय की विशालता का, लोप हो रहा है उसके स्थान पर "मज़हबी कर्म काण्डों" को धर्म कहा जाने लगा है। नदी नालों में गोता लगाकर, तस्वीर खिलौनों का दर्शन करके किसी पुस्तक के पन्ने रट देने, तिलक छाप लगा लेने, शिर मुड़ालेने, दाढ़ी रखा लेने, खड़ाऊ पहनने, सात बार आचमन कर लेने, तेरह बार हाथ माँज लेने या ऐसे ही किसी अन्य कर्मकाण्ड को करने वाले लोग धर्मध्वजी समझे जाते हैं, चाहे उनके आचरण और विचार कैसे ही क्यों न हों। वेश भूषा और सम्प्रदायिक कर्मकाण्डों के आधार पर धर्म की विवेचना होना इस बात का द्योतक है कि सच्चे धर्म की तो जानकारी भी लोगों को नहीं रही, धर्म के स्थान पर पाखंड विराजमान होगया, ईश्वर के स्थान पर शैतान की पूजा होने लगी। आज जो मनुष्य जितना धर्मात्मा बनने का ढोंग रचता है परीक्षा करने पर उसका हृदय उतनी ही मात्रा में अनुदारता, निर्दयता, कपट, असत्य, घमंड और स्वार्थरूपी पापों से भरा पूरा मिलता है। ढोंग के लिए करोड़ों रुपये पानी की तरह बहते दिखाई देते हैं पर सच्चे धर्म के लिए कोई कौड़ियां भी लगाने को तत्पर नहीं होता। यह सब परिस्थितियाँ बताती हैं कि मानव जाति से धर्म का लोप बहुत बड़ी मात्रा में होगया है। पाखंड की आड़ में अधर्म का साम्राज्य छाया हुआ है ऐसी दशा में पाप की दुर्गन्ध से अदृश्य लोकों का गंदा होना और उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप इन कष्ट क्लेशों का आना कुछ आश्चर्य की बात नहीं है।

जैसे कि बिल्ली दाँतों से दबाकर अपने बच्चे को आराम से ले जाती है और बच्चों को तकलीफ नहीं होती है, किन्तु चूहे को दाबकर मार देती है। उसी प्रकार ईश्वर भक्त को माया हानि नहीं पहुँचा सकती है। दूसरों को पीस कर डालती है।

× × ×

रस्सी को जला देने से उसकी ऐंठ बनी रहती है, परंतु उससे कोई काम नहीं ले सकते हैं। इसी प्रकार मनुष्य त्यागी होकर भी अहंकारी देखाई दे, तो उसे निरर्थक ही समझना चाहिए।

× × ×

घाव को भर जाने से उसके ऊपर की गली हुई खाल आप ही गिर जाती है, किन्तु कच्चे घाव से खाल को उचेलने से खून निकलने लगता है। उसी तरह दिव्यज्ञान की प्राप्ति होने पर भेदभाव दूर हो जाता है, किन्तु दिव्यज्ञान की उत्पत्ति से पहले भेद भाव नहीं मिट सकता है।

× × ×

निर्दोषों को पीड़ा क्यों ?

पिछले लेख में बताया गया है कि संसार की वर्तमान भयंकर दुर्दशा का प्रधान कारण वह व्यापक अनीति है जो भौतिक विज्ञान की सहायता से की गई है। यहाँ यह प्रश्न खड़ा होसकता है कि दंड केवल उन लोगों को मिल चाहिए था जिनने यह अनीति फैलाई। शेष लोग जो निर्दोष हैं उन्हें दंड क्यों भुगतना पड़ रहा है ? इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए हमें बहुत गहरा उतर कर वास्तविकता विवेचना करनी होगी। मोटी दृष्टि से देखने में केवल चंद लोग ही अपराधी प्रतीत होते हैं, परन्तु वस्तु स्थिति ऐसी नहीं है। उस अपराध में अप्रत्यक्ष रूप से वे लोग भी शामिल हैं जो मोटे तौर पर निर्दोष मालूम देते हैं।

भगवान मनु ने पशुवध में आठ व्यक्तियों को अपराधी बताया है, उनका मत है कि पशु की गर्दन पर छुरी फेरने वाला कसाई ही हत्यारा नहीं है वरन् वे लोग भी उस पाप में भागी हैं जो मांस [illegible]ते हैं, पकाते हैं, खाते हैं, इस व्यापार के लिये [illegible]न देते हैं, मांसाहार का समर्थन करते हैं, पशु [illegible] कसाई के हाथ बेचते हैं। अन्याय में सहयोग देने वाले एवं उसे सहन करने वाले भी अन्यायी की भांति ही अपराधी होते हैं। भले ही दुनियाँ की दृष्टि में वे निर्दोष प्रतीत हों, परन्तु तत्वतः उनका अपराध भी वैसा ही भारी और महान् होता है जैसाकि अनीति के मूल प्रवर्तक का। कहावत है कि "जालिम का बाप बुजदिल" होता है। अनीति की वृद्धि के मूल हेतु वे लोग हैं जो बुजदिली, स्वार्थपरता एवं आत्म हीनता के कारण बिना धर्म अधर्म का विचार किये क्षणिक सुख सुविधा पर मुग्ध होजाते हैं। ईश्वर ने मनुष्य को सद्बुद्धि, सत् विवेक, सद्वृत्तियाँ, इसलिए दी हैं कि वह क्षणिक लाभ के प्रलोभनों से बचता हुआ स्थायी और सच्चे लाभ का संपादन करे, भले ही आरंभ में उनके लिये कष्ट सहन करना पड़े।

नाना प्रकार की कूट नीतियाँ, शोषण प्रणालियां, अहित कर प्रथाऐं, प्रचलित हुईं, क्या यह सब केवल उनके मूल फैलाने वालों ने ही कर लिया ? क्या इसमें असंख्य लोगों का सहयोग नहीं था ? भले ही वह भूल से, भ्रमवश, या अज्ञान से हुआ हो पर इससे कोई छूट तो नहीं मिल सकती। भूल से भी अग्नि को छू लिया जाय तो परिणाम वैसा ही उपस्थित होता है जैसा कि जानबूझ कर अग्नि को छूने से होता। आज अनेक लोग जल रहे हैं यह लोग ठन्डे दिल से विचार करें तो पावेंगे कि किसी न किसी रूप में—अन्याय अनीति की वृद्धि में वे भी सहायक हुए हैं भले ही वह सहायता अप्रत्यक्ष रही हो। रावण, कुंभकर्ण मेघनाद आदि कुछ गिने चुने व्यक्ति आसुरी कार्य करते थे पर उनका सहयोग, समर्थन करने के कारण सारी लंका को दुख भोगना पड़ा। मंदोदरी, सुलोचना आदि महिलाऐं प्रत्यक्ष रूप से दुष्टकर्म नहीं करती थीं, परन्तु "दुष्ट का साथ न छोड़ना" यह भी कुछ कम अपराध न था इसलिए उन्हें भी नाना प्रकार यातनाऐं सहन करनी पड़ीं।

मनुष्य समाज विज्ञान की उन्नति के कारण अब पहले की अपेक्षा एक सूत्र में अधिक दृढ़ता के साथ आबद्ध होगया है। सारी मानव जाति एक ही नाव में बैठी हुई है यदि एक व्यक्ति नाव के पेंदे में छेद कर रहा है तो अन्य लोगों का कर्तव्य है कि उसे वैसा करने से रोकें यदि वे अपने कर्तव्य से—छेद करने वाले को रोकने से उपेक्षा करते हैं तो नाव में पानी भर जाने पर उन सबको ही दंड का भागी बनना पड़ेगा। आज के भयंकर समय में वे लोग भी डूबते हुए दिखाई पड रहे हैं जो मोटेतौर

से निर्दोष दिखाई पड़ते हैं, परन्तु जरा विचार तो कीजिए कि क्या कर्तव्य की उपेक्षा करना निर्दोषता का चिन्ह हैं।

"अपने मतलब से मतलब रखने" की घृणित नीति के पापफल का कडुआ अनुभव समस्त संसार को भुगतना पड़ रहा है तो इसमें भी कोई अचंभा नहीं है। एक आदमी का घर जलता रहे और दूसरा पड़ौसी "अपने मतलब से मतलब" की नीति अपनाकर खड़ा खड़ा तमाशा देखे तो उसका घर भी जले बिना न रहेगा। पड़ौस में हैजा फैले और दूसरा पड़ौसी उसे रोकने का प्रयत्न न करे तो उसे भी हैजे की छूत धर दबोचेगी। एक मनुष्य के घर पर चोर डाकू चढ़ आवें और पड़ौसी लोग समर्थ होते हुए भी उसमें हस्तक्षेप न करें तो कानून के अनुसार वे पड़ौसी भी सजावार होते हैं। संसार में कुछ लोग अनीति की वृद्धि करें और शेष लोग 'हमें क्या मतलब' कहकर चुप होजावें तो वह भी पाप के भागी होने से बच नहीं सकते। सम्मिलित उत्तर दायित्व में बँधे होने के कारण धर्म अधर्म का भागीदार भी सम्मिलित रूप से ही होना पड़ता है। आज अपने को जो लोग निर्दोष समझते हैं असल में वे भी "बढ़ते हुए अधर्म को रोकने में उपेक्षा करने" को पाप के भागी हैं और उसका दंड भुगत रहे हैं। इस प्रकार सारी मनुष्य जाति आज चतुमुर्खी विपत्तियों को सहन कर रही है। यह विपत्तियां तब तक चलती रहेंगी जब तक कि संसार अपनी भूल को भली प्रकार अनुभव करके सच्चे धर्म को अपनाने के लिए सच्चे हृदय से तैयार न होजायगा।

वर्तमान काल की असाधारण परिस्थितियों में, भूख, बीमारी, महँगी, युद्ध, दुर्घटना, दैवी प्रकोप, राजकोप, आदि के कारण जो कष्ट मिल रहे हैं उसका हेतु केवल मात्र 'पाप का दंड' ही नहीं है वरन् धर्म यज्ञ का बलिदान भी है। रावण संहार में सीता को, लक्ष्मण को, असंख्य बानरों को नाना प्रकार के कष्ट सहने पड़े थे। ऋषियों ने उस आपत्ति का निवारण करने के लिए घड़ा भर भर कर रक्त दान किया था। यह सब पाप के दंड नहीं कहे जा सकते। वर्तमान विपत्ति में जो देश, समुदाय, व्यक्ति कष्ट सहन कर रहे हैं उनमें से जिनका पक्ष अनीति का होगा वे पाप दंड भोग रहे हैं और जिनका पक्ष नीति का होगा वे धर्म स्थापना के लिए बलिदान कर रहे हैं। दंड भोगियों के हृदयों में अशान्ति बेचैनी और पश्चात्ताप कोलाहल कर रहा होगा किन्तु धर्म के निमित्त तप करने वाले लोग कष्ट सहन करते हुए भी आत्म संतोष का अनुभव कर रहे होंगे। वह संतोष हजारों भौतिक सुखों की अपेक्षा उन्हें अधिक आनन्द दे रहा होगा। ईश्वर की अवतारी किरणें जिन लोगों पर पड़ती हैं वे अधर्म का नाश करने के लिए राम के बानरों की भाँति तत्पर होजाते हैं और कष्ट सहन में भी आनन्द का अनुभव करते हैं।

ऊपर बताया जा चुका है कि क्यों निर्दोष दिखाई देने वाले लोग भी इस विश्वव्यापी भयङ्कर तूफान में कष्ट पारहे हैं। यह प्रसव की पीड़ा है। माता को प्रसव के समय बड़ा कष्ट होता है, परन्तु पीछे पुत्र रत्न को प्राप्त करके उसकी छाती ठंडी हो जाती है। उस वेदना के कारण ही पुत्र पर स्नेह अधिक होता है, जो वस्तु जितने कष्ट से प्राप्त होती है वह उतनी ही प्यारी लगती है। यदि बच्चे यों ही हंसते खेलते झड़ पड़ते तो उनसे इतना प्यार भी न होता। ईश्वर कलियुग को समाप्त करके नवीन युग सत् युग भेज रहे हैं उससे दुनियां प्यार करे इसलिए भी मानव जाति को यह प्रसववेदना सहन करनी पड़ रही है।

'हर व्यक्ति अपने कर्तव्य की जिम्मेदारी भली प्रकार अनुभव करे और अपने धर्म में किसी प्रकार भी उपेक्षा एवं प्रमाद की मात्रा न आने दें" इस

महत्व पूर्ण शिक्षा को अक्खड़ मास्टर हमें चपत मार मार कर सिखा रहा है। "ऐसा कुपथ्य फिर मत करना" इस शिक्षा को वैद्य की कड़ुई कुनैन पीपी कर हम लोग सीख रहे हैं। विज्ञान के द्वारा यदि अधिक शक्ति उपर्जित होती ही है तो उसका उपयोग केवल मात्र 'लोक हित' में ही करना और करने देना आज के महायुद्ध की एक बिशेष शिक्षा है जिसे भले प्रकार गले से नीचे उतरवाकर ही यह तूफान शान्त होगा।

जब तक भट्टी में आग जलती रहती है। तब तक दूध खौलता रहता है। जब आग का जलना बन्द हो जाता है। तब खौलना भी बन्द हो जाता है। उसी तरह आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त करने वाला जब तक उसकी साधना करता रहता है तभी तक उसका मन उन्नति के पथ पर चलता रहता है।

× × ×

मछलियों के किसी में कई जोड़ अस्थि होती हैं। किसी के बहुत कम होती हैं, परन्तु मांसाहारी हड्डियों को निकाल देते हैं। इसी तरह कोई मनुष्य कम पाप कर रहा है कोई अधिक, परन्तु जब ईश्वर की कृपा होती है तो सब दुराचार दूर हो जाते हैं।

× × ×

जैसे वास्तविक चीज से परछाईं की उत्पत्ति होती है। अग्नि से धुआँ निकलता है। उसी तरह कर्म के करने पर फल मिलता है। मनुष्य जैसा कर्म करता वैसा ही फल पाता है। अतः सुख और दुःख मनुष्य के कर्मों के पीछे चलते हैं।

× × ×

चेतावनी

[संतकबीर]

यह तन कच्चा कुंभ है, लिये फिरै था साथ।
टक्का लागा फुटि गया, कछू न आया हाथ॥
दीन गवाया दुनीं सो, दुनी न चाली साथ।
पाँव कुल्हाड़ा मारिया, गाफिल अपने हाथ॥
दुनियाँ के धोखे मुवा, चलै जु कुल की कान।
तब किसका कुल लाजि है जब ले धरा मसान॥
मैं मैं मेरी जनि करै मेरी मूल विनास।
'मेरी' पग का पैकड़ा, 'मेरी' गल की पास॥
कबीर नैया जर्जरी, कूड़े खेवन हार।
हलके हलके तरि गये, बूड़े जिन सिर भार॥
जग हट वाड़ा, स्वाद ठग, माया वेश्या लाइ।
रामचरन नीका गही, जनि जाय जन्म टगाइ॥
कबीर सो धन संचिये जो आगे को होय।
शीस चढ़ाये पोटली ले जात न देखा कोय॥
एक कनक अरु कामिनी, विषफल की एउ पाइ।
देखै ही ते विष चढ़ै, खाये से मरि जाइ॥
विषै कर्म की कंचुली, पहरि हुआ नर नाग।
सिर फोड़ै सूझै नहीं, को आगिला अभाग॥
जब विषयों में प्रेम है, तब अन्तर हरि नाँहिं।
जब अन्तर हरि जी बसें, तब न विषय चित माँहि॥
आग गहे दाझे नहीं, जो नहिं चंपे पाइ।
जब लग भेद न जानिए, राम कहा तो काइ॥
जान भगत का नित मरण, अनजाने का राज।
बुरा भला समझै नहीं पेट भरन सूं काज॥

हे महाकाल !

[श्री स्वामी दरबारीलाल जी सत्यभक्त वर्धा]

हे महाकाल ! तुम्हारी यह कैसी लीला है ? आज लाखों आदमी निर्दयता से मारे जा रहे हैं, करोड़ों आदमी भूखों मर रहे हैं, उन्हें रात में सोने को भी जगह नहीं है, जीवनोपयोगी पदार्थों का ध्वंस हो रहा है मनुष्य मनुष्य को खाये जा रहा है, यह सब क्या है ! तुम्हारी संहार लीला असमय में ही ऐसा प्रलयंकर रूप क्यों धारण कर रही है ?

क्या कहते हो ? यह मनुष्य के पापों का ही फल है ? मनुष्यदल बाँधकर जब दूसरे मनुष्यों को देशों और वर्गों को चूस डालना चाहता है तब उसकी ऐसी ही दुर्गतिहोती है।

हे भयंकर ! आदमियत पढ़ाने का तुम्हारा यह तरीका बड़ा निर्दय है। पर क्या तुम समझते हो कि आदमी में इस प्रकार शैतानियत बढ़ाकर नंगा चित्र खींचकर तुम उसे दूर कर सकोगे ? अभी तक तो ऐसा नहीं हुआ, शैतानियत बढ़ती ही जा रही है।

क्या कहते हो ? जब तक आंच से लोहा गलेगा नहीं तब तक ढाला न जायगा ! क्या इसी लिये मनुष्य जाति को इस प्रकार भट्टी में झोंके जाते हो। क्या आगे-आगे भट्टी को गरम ही करते रहोगे ? क्या मनुष्य जाति के भाग्य में और भी भयंकर विपदाएं बदी हैं ? पर करोड़ों आदमी इतने में भी घबरा उठे हैं-उन्हें अभी भी यह यह सब असह्य है !

क्या कहते हो ? जब वेदना असह्य होगी तब सब गल जायंगे ? क्या तभी अक्ल आयगी ? पर बहुतों को अक्ल आ चुकी है—वे गल भी गये हैं। अब तो थोड़े के पीछे बहुतों को गलना पड़ा रहा है।

एं ! क्या कहते हो ! बहुतों ने थोड़ों को छोड़ा नहीं है ? तो क्या जब तक थोड़े न गलेंगे तब तक बहुतों को भी गलना पड़ेगा ! हे न्यायमूर्ति ! बात तो सच कहते हो। संसार पर शैतानियत का ताडण्व करने वाले मुट्ठीभर लोग ही हैं। पर उनको उन लोगों का भी पीठबल है जो उनकी शैतानियत से पिस रहे हैं। इन लड़ाकू स्वभाव के लोगों के पीछे उन मजूरों गरीबों तक का बल है जो खुद पूंजीवाद से कराह रहे हैं ! पर दूसरे देशों के गरीबों को सताने में अपने नेताओं का साथ दे रहे हैं। तब तुम्हारा कहना ठीक ही है कि भस्म होकर भी बहुतों ने थोड़ों को छोड़ा नहीं है। पर हे शिव, ऐसे भी तो लोग हैं देश हैं जिनके न थोड़े न बहुत, किसी को पीसना नहीं चाहते हैं वे तो गले हुए हैं उन्हें भट्टी में क्यों डाल रक्खा है ?

क्या कहा ? वे कच्चा लोहा हैं ? उनमें बहुत-सा भाग ऐसा है जिसे जलाकर नष्ट कर देना है। तो क्या उन्हें भी बहुत देर तक भट्टी में रहना पड़ेगा ? हे शंकर यह क्या कहते हो ? वे तो बहुत निर्बल हैं, दीन हैं, न्याय चाहते हैं। उन्हें यह दण्ड क्यों ?

क्या कहते हो ! निर्बलता का नाम या संयम नहीं है ! ओह ! तुम बड़े कठोर हो। पर मैं मानता हूं कि तुम्हारे कहने में जरा भी झूठ नहीं है। निर्बल निर्बलनरों को चूसते हैं वहां हैवानियत है-संयम नहीं है। जब तक हैवानियत भस्म न हो जायगी तब तक तुम उन्हें भी भट्टी में झोंके रहोगे। हे महादेव ! तुम्हीं सत्य हो ! जैसा समझो करो। तुम महाकाल हो, अनन्त हो। हम चार दिन के कीड़े तुम्हारी अनन्त गम्भीर, अनन्त उन्नत और अनन्त व्यापक नीति को क्या समझें !—संगम

दिन भर के दुराचारों तथा बुरी आकांक्षाओं से अलग रहना रात भर के भजन से ज्यादा अच्छा है।

+ ÷ ÷

जिन्होंने शरीर का चकना चूर कर डाला है। वह वीर नहीं कहलाते हैं। धन्य है वे वीर जो जितेन्द्रिय हैं।

÷ + +

अपने साथ की हुई बुराई बालू पर लिखनी चाहिए और भलाई पत्थर पर।

+ + ÷

जो खुद ही अपना मालिक है वह दूसरों का भी बन जायगा।

÷ × +

जब स्वार्थ का अन्त समय आ जाता है तब क्लेश का भी अन्त समय होता है।

÷ × ÷

वह आ रहा है।

हमारी आंखें देखती हैं कि वह आ रहा है! ग्राह के फंदे से गज को छुड़ाने के लिए जैसे वह दौड़ा था वैसे ही शैतान के मुख में ग्रसित मनुष्यता को बचाने के लिए गरुण पर चढ़ा हुआ वह नटनागर तीर की तरह सन सनाता हुआ चला आ रहा है।

बस, बहुत हो चुका। मनुष्य को बड़ी करारी ठोकर लगी है। उंगलियाँ टूट गई है। घुटने फूट गये हैं और भेजे के बल ऐसा धडाम से गिरा है कि शिर में से खून की तलूली बन्ध रही है। मुद्दतों का खाया पिया निकल गया। मुद्दतों से पाली पोसी देह चकनाचूर हो गई। नस नस में दर्द हो रहा है, चिल्लाने की भी ताकत नहीं रही अब तो वह असहायावस्था पड़ा हुआ धीरे धीरे कराह रहा है। अपना बल जिसके मद से वह पागल बना हुआ था और पर्वत को तृण समझता हुआ आकाश को अपनी मुट्ठी में लेने की तैयारी कर रहा था आज वह बल चूर चूर हो गया है। ग्राह से ग्रसित होकर गज का घमंड टूटा था महायुद्ध की बिनाश लीला ने मनुष्य का मद चूर कर दिया है। इन पंक्तियों के लिखे जाते समय तक संसार का बड़ा भारी बिनाश हो चुका है और आगे और भी भयंकर त्रास होने वाला है। इस मर्मान्तिक के चोट से मनुष्य सिहर उठा है, उसकी आंखें अब खुली हैं और समझा है कि मैं चाहे जो करता रहूँ और उसकी कोई देख भाल न हो ऐसी बात नहीं है। बहुत उछलने वाला बालक जब माता की उपेक्षा करके अपने दुराग्रह पर जिद करता है तो माता उसे एक ठोकर खाने के लिए छोड़ देती है। अब वह चोट बहुत करारी लग चुकी है यह होश में ला देने के लिए कम नहीं है।

दयालु माता इस चोट के बाद चुप नहीं बैठी रहती वह दौड़ती है और पुत्र की मरहम पट्टी करती है। उसे पुचकारती है, छाती से लगाती है, दुराग्रह की हानि समझाती है और उपदेश करती है कि बेटा! अब ऐसा मत करना। सत्य को छोड़ कर असत्य की ओर, प्रेम को छोड़ कर मोह की ओर, न्याय को छोड़ कर अन्याय की ओर, जब मानव प्रवृत्तियां मुड़ी तो दिन दूने और रात चौगुने वेग से पतन के गर्त में गिरने लगीं। आज वे उस स्थान पर आ पहुची जहां अन्त होता है। ऊपर से गिरा हुआ पत्थर नीचे गिरता हुआ चला आता है और जब तक वह पतन मार्ग शेष रहता है तब तक वह क्रम जारी रहता है पतन मार्ग समाप्त होते ही नीचे के तल से वह टकराता है और एक बड़े शब्द के साथ चूर चूर हो जाता है। आज असुरत्व अन्तिम सीढ़ी से टकरा कर मनुष्यता में विग्रह उपस्थित हुआ है!

विनाशयश्च दुष्कृताम् के अध्याय को पूरा करता हुआ, 'धर्म संस्थापनार्थाय' वह बड़े वेग से आरहा है। मनुष्य दैवी तत्वों से बना हुआ है उसे देवता बन कर ही रहना है उसे देवता ही बन कर रहना होगा। कम से कम इस पुण्य भूमि भारती भगवती में तो वह देवत्व कायम ही रहेगा तेतीस कोटि देवताओं का यह सुरलोक पाप की पंक में पड़ा हुआ सड़ता नहीं रह सकता।

भगवान् सत्यनारायण आरहे हैं। असुरता का शोधन करके सुरतत्व का निर्माण करने के लिए गरुण वाहन आज बड़े द्रुत वेग से भूमण्डल पर आरहे हैं उनकी सुनहरी किरणों से दशों दिशाऐं जग मगा रही हैं। ऊषा काल की मलय समीर जागृत आत्माओं को चैतन्य करती हुई उन्हें उठने का उद्बोधन कर रही है, और उस उद्बोधन से प्रभावित होकर ऋषि रक्त की असंख्य कर्मवीर आत्माऐं उठ रही हैं और युग निर्माण की आधार शिला में अपने रक्त का पुन्य बलिदान देने के लिए प्रसन्न मुख खड़ी हुई हैं। लीलामय प्रभु की अलौकिक प्रतिभा भक्त जनों के अन्तरमनों में झांक रही है और उन्हें विश्वास दिला रही है कि 'धर्म संस्थापनार्थाय, मैं अविलम्ब आ रहा हूँ। विवेकवान आत्माऐं श्रद्धा पूर्वक दिव्य चक्षुओं से देख रही हैं, कि वह आ रहा है। सचमुच वह आ रहा है।

नव निर्माण कार्य

महाकवि होमर का कथन है कि "विनाश की पीठ पर नव निर्माण की आधार शिला रखी जाती है" एक वस्तु के नष्ट होने से ही उसके परमाणु दूसरी वस्तु बनाने में समर्थ होते हैं। नई तलवार बनाने के लिए किसी पुर ने लोहे को अग्नि में तपाने और कूटने की क्रिया किये बिना काम न चलेगा। अंकुर उत्पन्न होने से पूर्व बीज का गलना आवश्यक है। तत्वदर्शी आत्माएं जानती हैं कि भविष्य में सुन्दर युग का निर्माण होने वाला है इसके लिए वर्तमान संसार को आग में गला कर तपाया जारहा है हथौड़े की करारी चोटों से पीट पीट कर उसका नया स्वरूप बन रहा है। वर्तमान हाहाकारी परिस्थितियाँ बहुत अप्रिय एवं दुखद प्रतीत होती हैं तो भी इनके अन्तराल में एक सुख दायक भविष्य छिपा हुआ हमें दृष्टि गोचर होता है।

निस्संदेह संसार का यह ढाँचा बिलकुल बदल जाने वाला है जिसमें असत्य, लूट, छल, कपट, पाखंड, शोषण, घमंड, अपहरण, अत्याचार की प्रधानता है। इसके स्थान पर वह संसार बनेगा जिसमें कर्तव्य पालन, सेवा सद्भाव और भ्रातृत्व की प्रचुरता होगी। इस परिवर्तनकार्य का श्रेय ईश्वरीय अवतार को ही प्राप्त होगा। यहाँ भ्रम में पड़ने की जरूरत नहीं है। ईश्वर अवतार का अर्थ "व्यापक सत्ता को एक ही स्थान पर प्रकट होना" हम नहीं समझते वरन् यह समझते हैं कि न्याय तुला का संतुलन ठीक करने के लिए, धर्म की ग्लानि का निवारण करने के लिए, दुष्कृतों का विनाश और साधुओं का परित्राण करने के लिए, एक ऐसा दिव्य आध्यात्मिक प्रचंड प्रवाह अदृश्यलोक में उत्पन्न होता है जिसमें संसारकी सारी परिस्थितियों को बदल देने का बल होता है। उस ईश्वरीय प्रवाह को जागृत आत्माएँ अनुभव करती हैं और तदनुसार कार्य करते के लिए उद्यत हो जाती हैं। रावण वाद के क्रोध को करने के लिए जो दिव्य आध्यात्मिक प्रवाह उभरेगी लोक में उत्पन्न हुआ था उसमें असंख्य मनुष्य प्रकट भाग लिया, यद्यपि राम का कार्य सबसे ऊंचा दबाया गया और उन्हें ही अवतारी महापुरुष की उपाधि मिली तो भी वास्तव में वह कार्य अकेले राम ने ही नहीं कर लिया था वरन अनेक स्वार्थ त्यागियों का उसमें सहयोग था। कंस की दुर्नीति नष्ट करने का श्रेय कृष्ण को मिला तो भी अवतारी शक्ति की प्रेरणा से हजारों लोगों ने उस न्याय संतुलन में हाथ बटाया था। अमुक अवतारी महापुरुष ही युग परिवर्तन कर्ता था, या उसी ने धर्म स्थापना की ऐसा कहना उपयुक्त न होगा क्योंकि एक व्यक्ति फिर चाहे वह कितना ही महान् क्यों न हो अन्य सहयोगियों की सहायता के बिना अपना काम पूरा नहीं कर सकता। इस बात को भली प्रकार स्मरण रखना चाहिए कि अवतार व्यक्तियों के रूप में नहीं वरन् एक प्रवाह, जोश, विचार परिवर्तन, उत्साह, उमंग के रूप में होता है। वह जोश ईश्वर निर्मित होने के कारण दिव्य अलौकिक एवं विशेष प्रभावशाली होता है उससे असंख्य व्यक्ति प्रभावित होते हैं और अवतार की प्रेरणानुसार अधर्म को नष्ट करके धर्म स्थापना के लिए विशेष रूप से प्रयत्न करते हैं। अन्त में वह उद्देश्य पूरा होकर ही रहता है।

चारों ओर फैले हुए पाप पाखंड को नष्ट करने के लिए वर्तमान समय में जो ईश्वरीय अवतारी प्रेरणा अदृश्यलोक में उत्पन्न हुई है उसका प्रभाव जागृत आत्माओं पर विशेष रूप से पड़ रहा है। जिसका अन्तःकरण जितना ही पवित्र है जिसकी आत्मा जितनी ही निर्मल है वह उतना ही स्पष्ट रूप से ईश्वर की आकाशवाणी को, समय की पुकार को, सुन रहा है और अवतार के महान कार्य में सहायता देने के लिए तत्पर होरहा है। समय की समस्याओं

को वह ध्यान पूर्वक अनुभव कर रहा है और सुधार कार्य में क्रियात्मक सहयोग प्रदान कर रहा है। जिन आत्माएं कलुषित हैं, पाप अनीति और अन्धकार ने जिनके अन्तःकरण को ढक वे उल्लू और चमगादड़ की तरह प्रकाश देखकर चिढ़ रहे हैं। वे कुछ काल से फैली हुई नीति को सनातन बताकर पकड़े रहना चाहते हैं। सड़े गले कुविचारों का समर्थन करने के लिए पोथी पत्रे ढूढ़ते हैं। किसी पुराने व्यक्ति की लिखी हुई कुछ पंक्तियां यदि उन सड़े गले विचारों के समर्थन में मिल जाती हैं तो ऐसे प्रसन्न होते हैं मानो यह पंक्तियां साक्षात् ईश्वर ने ही लिखी हों। परिस्थितियाँ रोज बदलती है और उनका रोज नया हल ढूँढ़ना पड़ता है। इस सचाई को वे अज्ञान ग्रस्त मनुष्य समझ न सकेंगे और 'जो कुछ पुराना सब अच्छा जो नया सो सब बुरा' कहकर अपने अज्ञान और स्वार्थ का समर्थन करेंगे।

दीपक बुझने को होता है तो एक बार वह बड़े जोर से जलता है, प्राणी जब मरता है तो एक बार बड़े जोर से हिचकी लेता है। चींटीको मरते समय पंख उगते हैं, पाप भी अपने अन्तिम समय में बड़ा विकराल रूप धारण कर लेता। युग परिवर्तन की संध्या में पाप का इतना प्रचंड, उग्र और भयंकर रूप दिखाई देगा जैसा कि सदियों से देखा क्या सुना भी न गया था। दुष्टता हद दर्जे को पहुंच जायगी एक बार ऐसा प्रतीत होगा कि अधर्म की अखंड विजयदुन्दभी बज गई और धर्म बेचारा दुम दवा कर भाग गया किन्तु ऐसे समय भयभीत होने का कोई कारण नहीं यह अधर्म की भयंकरता अस्थायी होगी, उसकी मृत्यु की पूर्व सूचना मात्र होगी। अवतार प्रेरित धर्म भावना पूरे वेग के साथ उठेगी और अनीति को नष्ट करने के लिए विकट संग्राम करेगी। रावण के सिर कट जाने पर भी फिर नये उग आते थे फिर भी अन्ततः रावण मर ही गया। संवत् दो हजार के आसपास अधर्म नष्ट हो हो कर फिर जीवित होता हुआ प्रतीत होगा उसकी मृत्यु में बहुत देर लगेगी, पर अन्त में वह मर ही जायगा।

तीस वर्ष से कम आयु के मनुष्य अवतार की वाणी से अधिकप्रभावित होंगे वे नवयुग का निर्माण करने में अवतार का उद्देश्य पूरा करने में विशेष सहायता देंगे। अपने प्राणों की भी परवा न करके अनीति के विरुद्ध वे धर्म युद्ध करेंगे और नानाप्रकार के कष्टों को सहन करते हुए बड़े से बड़ा त्याग करने को तत्पर हो जावेंगे। तीस वर्ष से अधिक आयु के लोगों में अधिकांश का आत्मा भारी होगा और वे सत्य के पथ पर कदम बढ़ाते हुए झझकेंगे। उन्हें पुरानी वस्तुओं से ऐसा मोह होगा कि सड़े गले कूड़े कचरे को हटाना भी उन्हें पसंद न पड़ेगा। यह लोग चिरकाल तक नारकीय बदबू में सड़ेंगे, दूसरों को भी उसी पाप पंक में खींचने का प्रयत्न करेंगे, अवतार के उद्देश्य में, नवयुग के निर्माण में, हर प्रकार से यह लोग बिघ्न बाधाऐं उपस्थित करेंगे। इस पर भी इनके सारे प्रयत्न बिफल जायेंगे, इनकी आवाज को कोई न सुनेगा, चारों ओर से इन मार्ग कंटकों पर धिक्कार बरसेंगी, किन्तु अवतार के सहायक उत्साही पुरुष पुंगब त्याग और तपस्या से अपने जीवन को उज्ज्वल बनाते हुए सत्य के विजय पथ पर निर्भयता पूर्वक आगे बढ़ते जावेंगे।

अधर्म से धर्म का, असत्य से सत्य का, अनीति से नीति का, अन्धकार से प्रकाश का, दुर्गन्ध से मलयानिल का,सड़े हुए कुविचारों से नवयुग निर्माण की दिव्य भावना का घोर युद्ध होगा। इस धर्म युद्ध में ईश्वरीय सहायता न्यायी पक्ष की मिलेगी। पांडवों की थोड़ी सेना कौरवों के मुकाविले में, राम का छोटा सा बानर दल बिशाल असुर सेना के मुकाविले में, विजयी हुआ था। अधर्म अनीति की विश्व व्यापी महाशक्ति के मुकाविले में सतयुग निर्माताओं का दल छोटा सा मालूम पड़ेगा, परन्तु भली प्रकार नोट कर लीजिए हम भविष्यवाणी करते हैं कि निकट भविष्य में, सारे पाप प्रपंच ईश्वरीय कोप की अग्नि में जल-बल कर भस्म होजायेंगे और संसार में सर्वत्र सद्भावों की विजय पताका फहरावेंगी।

दुर्दशा का अन्त

अनेक विद्वान् आध्यात्म तत्ववेत्ता, भविष्यदर्शी महानुभाव बहुत दिन पूर्व से ही यह कहते आरहे हैं कि "सम्वत् २००० में खण्ड प्रलय होगी। उस वर्ष संसार के ऊपर बड़ी बड़ी विकट आपत्तियां आवेंगी एवं बड़ा भारी जन संहार होगा, तत्पश्चात् नवीन युग की सतयुग की स्थापना होगी"।

उपरोक्त कथन से हम पूर्णतया सहमत हैं हमारा विश्वास है कि संवत् २००० विक्रमी का वर्ष इतना महत्वपूर्ण है कि शायद अगले कई हजार वर्षों में इतना महत्वपूर्ण संवत् दूसरा न आवे। महायुद्ध का पूर्णतः अन्तिम निर्णय होने में तो अभी बहुत समय लगेगा परन्तु संवत् २००० में ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाँयगी जिनके आधार पर अन्तिम निर्णय की भूमिका का भली प्रकार परिचय प्राप्त हो सकेगा। उलझी हुई गुत्थियाँ धीरे धीरे सुलझने लगेंगी और यह पता चलने लगेगा कि इसका अन्त किस प्रकार होने वाला है। संवत् दो हज़ार के अन्त में आकाश साफ होने लगेगा और प्रभात के आगमन की पूर्व सूचना स्पष्ट रूप से प्राप्त होने लगेगी। इस वर्ष में तो कई बार परिस्थितियाँ पलटा खावेंगी। कभी एक पक्ष कभी दूसरा पक्ष आगे पीछे बढ़ता दिखाई देगा, इस दरम्यान साधारण बुद्धि के मनुष्य कुछ ठीक ठीक अन्दाज न लगा सकेंगे परन्तु वर्ष के अन्तिम दिनों में फैसले का अन्दाज लगाना सर्व साधारण के लिए भी सरल हो जायगा।

संवत् २००० में ही युद्ध का अन्त हो जायगा ऐसा हम नहीं कहते। हमारी दृष्टि में यह कलह अभी आगे तक चलेगा। मित्र,शत्रुके रूप में और शत्रु मित्र के रूपमें बदलते दिखाई देंगे। शान्ति के स्थानों में आग भड़केगी और आग उगलने वाले ज्वाला मुखी शान्त हो जावेंगे। लोगों को ऐसी ऐसी कई कठिनाइयों के बीच में होकर गुजरना पड़ेगा जिसकी आज कल्पना भी नहीं की जा सकती। सोना, चांदी, गोली, बारूद, तेल, कोयला, रसद, हथियार तथा मनुष्यों की बड़ी भारी क्षति होगी। साधनों के अभाव में थके हुए, परास्त देश प्रत्यक्ष रूप से पराजित, शान्त, हो जाँयगे परन्तु उनके भीतर प्रतिहिंसा, क्षोभ तथा क्रोध की अग्नि धधकती रहेगी। यह अग्नि रह रह कर उभरेगी। शान्ति को भंग करके एक दम अशान्ति के चिन्ह प्रकट हो जाया करेंगे और बड़े प्रयत्न से उन्हें बार बार दबाया जाया करेगा। जिन देशों की जीत होगी वह भी करीब २ पराजित से ही होंगे। क्योंकि हारे हुए देशों को काबू में रखने के लिये बलपूर्वक दमन की प्रणाली पर विशेष ध्यान देना पड़ेगा और उसमें उनकी शक्ति का बहुत अंश व्यय होता रहेगा। हो सकता है कि एक दो वर्ष में ही इस युद्ध की हार जीत प्रकट हो जाय, परन्तु वह स्थायी न होगी। अक्सर अशान्ति, बगावत, खून खराबी, अव्यवस्था के उबाल आते रहेंगे और बार बार संसार की शान्ति भंग होती रहेगी। शान्ति और व्यवस्था कायम करने में ही अत्यधिक शक्ति खर्च होती रहेगी नव निर्माण का कार्य जहाँ का तहां अधूरा पड़ा रहेगा, क्योंकि शान्ति के बिना कोई नई व्यवस्था' न तो स्थायी रूप से बन सकती है और न चल सकती है।

कौन पक्ष जीतेगा, इस प्रश्न का उत्तर देने की कोई आवश्यकता नहीं, केवल इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि निकट वर्ती फैसला जो कि शस्त्र बल से होगा, अस्थायी साबित होगा उसमें पूर्ण रूप से अधर्म का नाश न हो पावेगा और न पूर्ण रूप से धर्म की विजय होगी। यह कार्य अधूरा होगा। शस्त्रों का फैसला अस्थायी और धर्म का फैसला स्थायी होता है। शस्त्र विजय के साथ धर्म विजय की भी आवश्यकता है। संसार में सच्ची शान्ति शस्त्रों से नहीं वरन् ईमानदारी से होती है इस समय शक्ति के नशे में चूर होकर संसार शस्त्रों को प्रधानता दे रहा है, ईमानदारी का मूल्य उसकी समझ में न कुछ के बराबर है। बुद्धिमान लोग इसे भूल नहीं मानते, वरन् इसे अपनी बुद्धि चातुरी, कूट नीतिज्ञता मानते हैं। हमारा विचार है, कि शस्त्र की अपेक्षा ईमानदारी का बल अधिक है। महाप्रभु ईसा मसीह को सत्ता धारियों ने हथियार के बल से मिटा दिया था,परन्तु पीछे उन्हें पता चला कि हथियार

से भी सत्य का बल अधिक है। आज शक्तिवान् सत्ताधारी उसी भूल को फिर दुहरा रहे हैं। 'किसी भी प्रकार से जीत' की लालसा मानवता को तिलाञ्जलि दे रही है।

यह मनोभावनायें जब तक काम करती रहेंगी। तब तक संसार में शान्ति कायम न होगी। बहुत ठोकरें खाने के बाद, अभी वर्षों का बहुमूल्य समय खो देने में बाद बुद्धिमान लोग यह महसूस करेंगे, कि बारूद से नहीं सद्भावना से शान्ति कायम हो सकती है। जब विजयी और पराजित दोनों ही नाश रोप, क्षोभ, क्रोध, उत्पात, खून खराबी और दमन से ऊब जांयगे, तब वे भूल को महसूस करेंगे। बहुत कुछ खोने के बाद वे यह समझ पायेंगे कि लूट, आपा-पूती, शोषण और दमन की रीति बुरी है। झूठी-झूठी बातें प्रचारित करने से, बहकावे, भुलावे, और फ़ुसलावे देने से, दूसरों को अपने पक्ष का नहीं बनाया जा सकता, वरन् हृदय परिवर्तन होने पर जो ईमानदारी का प्रत्यक्ष रूप से दिव्य दर्शन होता है, उसी के प्रभाव से परायों के दिल जीत कर उन्हें बे पैसे का और बिना हथकड़ी का गुलाम बनाया जा सकता है।

ऐसी सद्बुद्धि हमारे आज के राष्ट्रपतियों में देर से आवेगी। तब तक धरती माता रक्त से स्नान करती रहेगी। जिस दिन विवेकवान् मनुष्य हथियारों की अपेक्षा ईमानदारी को अधिक महत्व देंगे, उस दिन अन्तरिक्ष के उतरती हुई भगवती शान्ति देवी पृथ्वी पर प्रकट होगी। दोनों ही पक्ष जब थक जांयगे तो निशस्त्रीकरण की आवश्यकता अनुभव करेंगे और विजय की अपेक्षा विश्व बन्धुत्व को महत्व देंगे। ऐसी भावनायें जब संसार में फैलने लगें तब समझना चाहिये कि सच्ची और स्थायी शान्ति का समय अब निकट आगया।

× × ×

संवत् दो हजार में युद्ध अपनी भयंकरता पर रहेगा। इसके अन्तिम दिनों में अस्थायी विजय के चिन्ह प्रकट होने लगेंगे। उसके उपरान्त कुछ समय में महायुद्ध का निर्णय होजायेगा। स्थूल दृष्टि से हथियारों का युद्ध समाप्त हो जावेगा, परन्तु क्रोध और प्रतिहिंसा की भावनायें जीवित रहने के कारण सूक्ष्म युद्ध जारी रहेगा। इसके कारण कई वर्षों तक अशान्ति बनी रहेगी। साथ ही बीमारियों के प्रबल प्रकोप होंगे। भूकम्प, अति वृष्टि, अना वृष्टि, बाढ़ आदि नाना प्रकार के दैवी प्रकोपों से मनुष्य जाति का कष्ट बढ़ता रहेगा। अन्त में एक समय ऐसा आवेगा, जब संसार के विचार शील मनुष्य मिलकर स्थायी शान्ति की मन्त्रणा करेंगे। जाति गत, देशगत, दल गत, तुच्छ स्वार्थों को छोड़ कर वे सम्पूर्ण मानव जाति की हित दृष्टि से कोई व्यवहारिक योजना बनावेंगे। सत्य और न्याय की प्रधानता रखने वाली भावनायें लोक में आदर प्राप्त करती हैं। इस सार्वभौम शान्ति की योजना का संसार में सर्वत्र आदर किया जायगा। भ्रातृभाव, समता, सदाचार, प्रेम, ईमानदारी, न्याय के आधार पर विश्व हितकारी धर्म, नीति, ज्ञान, शिक्षा, समाज, शासन आदि की रचना होगी। तब सतयुग दृष्टि गोचर होगा। इस कार्य में दश वर्ष भी लग जावें तो क्या उसे अधिक समय कहा जायगा ?

× × ×

संवत् २००० के बाद सतयुग आवेगा। इसका अर्थ यही लेना चाहिये, कि आगे के लिये उत्तम परिस्थितियाँ बनना आरम्भ हो जायगा। आषाढ़ मास में दिन छोटा होना शुरू होजाता है, परन्तु जिस दिन से दिन छोटा होना शुरू हुआ, उसके दूसरे ही दिन ऐसा नहीं होसकता, कि दिसम्बर की बराबर १० घन्टे का दिन हो जायगा। १४ घन्टे के दिन को १० घन्टे का होने में प्रायः ६ महीने लग जाते हैं। इसी प्रकार संवत् २००० के बाद श्रेष्ठ युग आने का बीजारोपण हो जायगा और वह पौदा धीरे-धीरे बढ़ता हुआ अन्त में पल्लवित वृक्ष हो जायगा। मनुष्य जीवन में जैसे एक घन्टे का कुछ विशेष महत्व नहीं है, वैसे ही विश्व व्यापी किसी भली बुरी व्यवस्था के कायम होने में पच्चीस पचास वर्ष भी अधिक नहीं है सुन्दर आभूषण बनाने के लिए सोना लेकर सुनार बैठता है। कुछ समय में आभूषण बन कर तैयार हो जायगा, परन्तु सुनार के सोना छूते ही वह नहीं बन जाता। सोने को

गलाने, नये सांचे में ढालना, खरादना, पालिस करना, यही सब जलाने, काटने, घिसने, ठोकने पीटने के कार्य आरम्भ में होते हैं। सतयुग को निर्माण आरम्भ करते हुए परमात्मा भी वर्तमान सृष्टि की ऐसी ही ठोक पीट आरम्भ कर रहा है, जब तक आभूषण बिलकुल साफ सुन्दर नहीं हो जाता, तब तक सुनार के औजार उस पर चोट करते ही रहते हैं। सर्वत्र पूर्ण रूप से सुव्यवस्था स्थापित होने तक संघर्ष, कष्ट और कठिनाइयों का दौर जारी रहेगा। अवश्य ही धर्म युग प्रवर्तित होगा पर उसके आगमन से पूर्व हथौड़े की अनेक चोटें भी सहनी होंगी। केवल एक वर्ष कठिनाइयों में गुजारना है, ऐसा सोचने वाले अपना विचारों को बदल दें। इस निर्माण कार्य में अनेकों को बल पूर्वक नष्ट होना पड़ेगा और अनेकों को इस महान् यज्ञ में अपनी स्वेच्छा आहुति देकर ईश्वरीय अवतार की इच्छा पूर्ण करनी होगी। तब कहीं क्रान्ति का समय उपस्थित होगा। उस उत्तम समय के लिए यदि दस वर्ष भी प्रतीक्षा करनी पड़े तो इतना समय इस महान् कार्य के पूरा होने की तुलना में कुछ क्षणों के समान ही थोड़े प्रतीत होंगे।

संसार में स्वार्थ के कारण सब झगड़े फैलते हैं। अगर इस संसार से स्वार्थ चला जाय तो यह अत्यन्त सुन्दर स्थान बन जायगा।

× × ×

जो भाग्य के भरोसे पर बैठे हैं। प्रतीत होता है कि वे जीवन पर्यन्त बैठे रहेंगे।

× × ×

जब चोर चोरी के लिये मकान में जाता है। तो पहले निकलने का रास्ता देख लेता है। उसी तरह अगर तुम संसार से तथा सांसारिक चीज़ों से प्रेम करना चाहते हो तो इससे पहले वह रास्ता देखलो, कि अगर तुम्हारा इनसे वियोग भी हो जाय, तो तुम्हारे हृदय में चोट न लगे।

× × ×

युद्ध के बाद की दुनियां।

पिछले लेखों में यह बताया जा चुका है कि गत शताब्दियों की सामाजिक, राजनैतिक, शारीरिक तथा मानसिक पापों का संशोधन करके संसार को निर्मल बनाने के लिये यह विपत्ति आई है। इसका उद्देश्य अव्यवस्था और अनीतियों को दूर करके नीति का स्थापन करना है। युद्ध चाहे कितनी ही जल्दी समाप्त हो जाय या कितना ही लम्बा चले पर इतना निश्चित है कि युद्ध का अन्तिम अन्त होने के उपरान्त एक विश्व व्यापी सतयुगी व्यवस्था का जन्म होगा।

इस व्यवस्था के मुख्य आधार यह होंगे (१) साम्प्रदायिक कलह का अन्त (२) पैसे का समुचित विभाजन (३) विश्व बन्धुत्व (४) शक्ति पर न्याय का नियन्त्रण (५) सदाचार को प्रोत्साहन (६) अधिकारों की रक्षा (७) अनिवार्य शिक्षा (८) सार्वभौम शासन (९) विज्ञान का सदुपयोग। इनकी रूप रेखा का मोटा ढाँचा इस प्रकार समझना चाहिए।

(१) साम्प्रदायिक कलह का अन्त—शिक्षा की वृद्धि के साथ साथ साम्प्रदायिक अन्ध विश्वासों का अन्त हो जावेगा। यह लोगों की व्यक्तिगत मान्यता की चीज़ समझा जायगा। उनको इस सीमा तक न बढ़ने दिया जायगा कि एक दूसरे से उलझें या अपना दबाव दूसरे पर डालें। एक ही मानव धर्म की व्यापकता होगी। साधारणतः सब लोग एक ही धर्म को मानेंगे। व्यक्तिगत मत रखने की छूट होगी। तो भी मजहबों को इतनी प्रधानता न मिलेगी कि दो व्यक्तियों को एक दूसरे से अलग करदें। जैसे एक भाई कृष्ण उपासक दूसरा राम उपासक रहते हुए भी वे दोनों साथ साथ एक घर में रहते हैं वैसे ही ही पति-पत्नी, पिता-पुत्र भिन्न मजहबों को पसन्द करते हुए भी प्रेम पूर्वक एक साथ रहेंगे। मजहब

भेद के कारण व्यवहारिक जीवन पर कोई असर न पड़ेगा। इस प्रकार साम्प्रदायिक कलह का कोई कारण ही न रह जावेगा।

(२) **पैसे का समुचित विभाजन**—कोई आदमी आवश्यकता से अधिक व्यक्तिगत पूंजी जमा न करेगा। रोजगार हर आदमी को देने की जिम्मेदारी सरकार की होगी। हर समर्थ आदमी को भोजन पाने के लिये परिश्रम करना पड़ेगा। व्यापार जनता की आवश्यकता पूरी करने के लिए होंगे धन एकत्रित करने के लिए नहीं। पैसा एक स्थान पर जमा न होकर सब लोगों तक पहुँचे ऐसी आर्थिक व्यवस्था बनाई जायगी।

(३) **विश्व बन्धुत्व**—देश भक्ति के नाम पर या जाति भक्ति के नाम पर, दूसरे देश या दूसरा जाति वालों के स्वार्थों का अपहरण न किया जायगा। विदेशियों का शोषण करना, गुलाम बनाना, आक्रमण करना, नीच समझना, अपमानित करना, वर्जित होगा। संसार भर के सभी देशों को भाई चारे और समानता की दृष्टि से देखा जायगा। देश भक्ति का अर्थ पड़ोसियों की अधिक सेवा ही रहेगा पर उस की संकुचित सीमा न रहने दी जायगी जिसके कारण अन्य देश जाति वालों के साथ अनीति का व्यवहार किया जाता है।

(४) **शक्ति पर न्याय का निमंत्रण**—आत्मोन्नति के लिए शक्ति बढ़ाने का अधिकार तो सब को होगा पर उन बुद्धि, शरीर, या पैसे की शक्तियों से दूसरों पर अन्याय करने का हक किसी को न होगा। अपने से कम शक्ति वालों को प्रत्यक्ष या परोक्षरूप से सताना, भ्रम में डालना, विवश करना, अपराध समझा जायगा और उस अपराध को रोकने का राज्य की ओर से कठोर नियंत्रण किया जायगा। बलवान को उच्छृंखल न होने दिया जायगा जिससे वह सेवा की बजाय शोषण में उसे लगावे।

(५) **सदाचार को प्रोत्साहन**—दूसरों की भलाई करने वाले, परोपकारी, ज्ञानी, धर्म, प्रचारक, वैज्ञानिक, शोध करने वाले, समाज सेवी, व्यक्तियों को राजकीय प्रोत्साहन प्राप्त होगा। भलाई, नेकी; ईमानदारी, परस्पर सहायता को कूट कूट कर मानव-स्वभाव में भर देने के लिए शिक्षा के प्रत्येक सूत्र से काम लिया जायगा। लोगों को सद्गुणी, सदाचारी, सेवाभावी, कर्तव्य परायण बनाने के लिए वातावरण तैयार किया जायगा।

(६) **अधिकारों की रक्षा** प्रत्येक मनुष्य को स्वतंत्रता, समानता और सम्मान के साथ जीने का अधिकार है किन्तु स्वार्थी लोग अपने लाभ के लिए दूसरों के इस अधिकार का हनन करके नीच कोटि का जीवन विताने के लिए वाध्य करते हैं। स्त्रियों के साथ, शूद्रों के साथ, भारतवर्ष में ऐसी ही अनीति वर्ती जाती है। विदेशों में भी अल्प ज्ञान और शक्ति वाले लोगों के साथ ऐसा ही व्यवहार होता है। यह अनीति बन्द कर दी जायगी और लेखन संबधी, भाषण संबंधी, आत्मोन्नति संबधी, स्वेच्छानुसार रहन सहन संबंधी तथा कानून व्यवस्था में भाग लेने के नागरिक अधिकार सब लोगों को समान रूप से प्राप्त होंगे।

(७) **अनिवार्य शिक्षा**—अशिक्षित मनुष्य संसार के लिए भार रूप है। मानसिक विकाश की सुविधाऐं शिक्षा के विना प्राप्त नहीं हो सकती और न इस युग में अशिक्षित व्यक्ति का व्यक्तिगत जीवन समुन्नत हो सकता है। इसलिए समाज का यह कर्तव्य होगा कि हर व्यक्ति को कम से कम काम चलाऊ शिक्षा प्राप्त करने के लिए बल पूर्वक प्रेरित करे। अशिक्षित रहना कानूनन जुर्म बना दिया जायगा। जो लोग स्वेच्छा से न बढ़ेंगे वे कैदखाने में पढ़ने के लिए बाध्य किये जावेंगे।

(८) सार्वभौम शासन—विश्व भर का एक संगठित राज्य होगा। जो सब देशों को नीति मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करेगा और आन्तरिक शासन में तथा दूसरे देशों पर अनीति करने से सत्ता धारियों को रोकेगा। यद्यपि भाषा संस्कृति और भौगोलिक दृष्टि से अलग अलग देशों की रचना रहेगी और उनका शासन भी वहीं के लोग करेंगे फिर भी सार्वभौम शासन का हर देश पर नियंत्रण रहेगा जिससे कोई किसीको सता न सके।

(९) विज्ञान का सदुपयोग—विज्ञान द्वारा नित नये आविष्कार होते हैं। इनका उपयोग केवल मानव जाति की अधिक सेवा सुविधा के लिए ही किया जायगा। चन्द लोगों के स्वार्थ साधन के लिए असंख्य लोगों के शोषण का कार्य जो आजकल यान्त्रिक अविष्कारों द्वारा होरहा है वह न रहेगा। केवल उन्हीं आविष्कारों को प्रचलित रहने दिया जायगा जो सार्वजनिक लाभ के लिए सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर भी उपयोगी सिद्ध हों, हानिकारक यंत्र और आविष्कारों का प्रचलन न होने दिया जायगा।

उपरोक्त आधारों पर संसार का नई व्यवस्था रची जायगी। कानून, व्यवस्था, प्रथा, परिपाटी, संस्कृति, कला, शिक्षा का इस आधार पर निर्माण होगा। जिससे चारों ओर ऐसे साधन जुट जावेंगे जो मानव जीवन की उन्नत, विकसित, सरल, एवं प्रसन्नता मय बनाने में सहायक हों। अनीतियों और भ्रम पूर्ण धारणाओं के विरोध में ऐसा प्रचण्ड लोकमत तैयार होगा जिसमें उनका एक क्षण के लिए भी जीवित रहना कठिन हो जायगा। सब लोग सत्य, प्रेम, न्याय, सहानुभूति, सहायता एवं भ्रातृभाव के साथ सुखी सम्पन्न एवं सादा जीवन व्यतीत करेंगे। द्वेष, कलह, कपट, छल, दुराचार, कहीं दिखाई भी न पड़ेगा। ऐसा सतयुग निकट भविष्य में शीघ्र ही आने वाला है। युद्ध की अन्तिम समाप्ति तक वर्तमान लोगों से बहुत लोग जीवित न रहेंगे पर जो रहेंगे वे उस स्वर्गीये समय का आनन्द प्राप्त करेंगे।

———

'सत्य' क्या है ?

(भगवान वेदव्यास)

परत्र स्वबोध संक्रान्तये वागुक्ता सा यदि न वञ्चिता भ्रान्ता व प्रतिपत्ति बन्ध्या वा भवेदिति। एषा सर्वभूतोपकारार्थ प्रवृत्ता, न भूतोपघाताय। यदि चैवमप्यभिधीयमाना भूतोपघात परैव स्यान्न सत्यं भवेत् पापमेव भवेत्।

योग भाष्य २।३०

'सत्य' वह है (चाहे वह वञ्चिता, भ्रान्ता और प्रतिपत्तिबन्ध्या युक्त हो अथवा रहित) जो प्राणि-मात्र के उपकारार्थ प्रयुक्त किया जाय न कि किसी प्राणी के अनिष्ट के लिए। यदि सत्यता पूर्वक कही गई यथार्थ बात से प्राणियों का अहित होता है—तो वह "सत्य" नहीं। प्रत्युत सत्याभास ही है और ऐसा सत्य भाषण असत्य में परिणत होकर पाप कारक बन जाता है। जैसे किसी गौ के अमुक मार्ग से जाने विषयक-गौ-घातक के पूछे जाने पर सत्य भाषी के यह कहने पर कि हाँ, गाय अभी अभी इस मार्ग से उधर को गई है। यह सत्य प्रतीत होने पर भी सत्य नहीं, प्रत्युत प्राणी घातक है। अतः आत्म रक्षार्थ एवं पर परित्राणार्थ अन्य उपायों के असंभव हो जाने पर असत्य भाषण करना भी सत्य ही है।

———

आश्चर्य पूर्ण भविष्यवाणियाँ

[लेखक- विद्याभूषण पं० मोहन शर्म्मा, विशारद, पूर्व सम्पादक 'मोहिनी']

आज का संसार जिस हाहाकार मयी अवस्था में से गुजर रहा है, उसको देखते और अनुभव करते हुये मानव ने अन्तिम परिणाम के सम्बन्ध में बड़ी २ अटकलें लगाई हैं, इस एक बात के निर्णय के लिये विविध खोजों और भविष्य वाणियों के आधार पर आज नाना प्रकार की आश्चर्य मय और दिल दहला देने वाली बातें नित्य कही सुनी और पढ़ी जारही हैं। इन सबमें सत्यांश और यथार्थता कहां तक कितनी है—इसका ठीक ? जवाब तो आने वाला भविष्य और उसकी घटनाएँ ही देंगी, परन्तु वर्षों से इस विषय में आसक्ति और दिलचस्पी रखने वाले जो सुनते और पढ़ते आरहे थे उसका एक जीवित प्रमाण 'वर्त्तमान महायुद्ध का ताण्डव नृत्य" आज हमारे सामने ही है और यह खंडप्रलय जैसी दुर्घटना से कुछ कम नहीं हैं। अब तक करोड़ों मनुष्यों की इस महा संग्राम में आहुति पड़ चुकी है और इसके साथ ही साथ समग्र संसार में कठिनाईयों और दुखों का वेग उत्तरोत्तर बृद्धि ही पारहा है। अतः आस्तिक मात्र के लिये यह मानने से कदापि इन्कार नहीं हो सक्ता कि इस भयङ्कर उथल पुथल के अनुष्ठान में विधातृ पुरुष ! का अवश्य ही हाथ है। और ऐसे दुर्निवार्य योग संसार में जीव मात्र के किसी भावी कल्याण को लेकर ही उपस्थित होते हैं। असत और कदाचार की बढ़ोत्तरी जब अपनी सीमा पार कर जाती है तब ही असतरूपी अन्धकार को चीर कर सत्य सूर्य का दिव्यालोक पृथ्वी भर में परिव्याप्त हो जाता है। प्रत्येक धर्म का प्राचीन इतिहास गौरव इसकी साक्षी कराता है। इस भावी सत्योदय का आभास हमें संसारप्रसिद्ध ज्योतिर्विदों की ज्योतिषिक भविष्यवाणियों पर से भी कुछ २ मिलता है, जिनमें से कुछ एक के आश्चर्य जनक उद्धरण पाठकों के लाभार्थ नीचे दिये जाते हैं। यद्यपि इनमें केवल युद्ध और खण्ड प्रलय जैसी भावी घटनाओं का उल्लेख आया है पर उनसे अन्तिम सुन्दर परिणाम की भी झलक मिलती है।

१—जगद्विख्यात श्वेताङ्ग भविष्यवेत्ता नौस्ट्राडम का भविष्य कथन।

पन्द्रहवीं शताब्दी के लगभग यूरोप में नौस्ट्राडम नामक एक महान ज्योतिर्विज्ञानी पण्डित होगया है,जिसने आगामी ७००० वर्षों के सम्बन्ध में प्रायः १००० भविष्य वाणियाँ की थीं और जो प्रायः अब तक कालक्रम की कसौटी पर सत्य सिद्ध होती आ रही हैं। नौस्ट्राडम ने नैपोलियन बोनापार्ट महान के अभ्युदय और पतन का जैसा संकेत किया था, कालान्तर में वैसा ही हुआ। हिटलर के आगमन से संसार में महाविग्रह की ज्वालाएँ फटने, फ्रान्स की मेजीनाट लाईन (किलाबंदी) का असमय विध्वंस होने, बृद्धपेंता के आगमन और पुनः उनकी सत्ता लोप होने का उसका भविष्य कथन भी एक के बाद एक, सत्य होता चला आरहा है बृद्धपेंता के आगमन की बात ससार के सामने ही है—अब इसके आगे क्या होगा—उसे भी दुनियाँ नौस्ट्राडम के इस भविष्य कथन से तौलकर देखेगी।

फ्रान्स की काया पलट के सम्बन्ध में उसने स्वलिखित भविष्यवाणियों में जिन घटनाओं का चित्रण किया था वे आजतक बराबर घटित होती आई हैं। नौस्ट्राडम ने संसार के सुदूर भविष्य के सम्बन्ध में जो फलादेश वर्णन किया है, वह और भी आश्चर्यजनक तथा हृदय को कंपा देने वाला है। नौस्ट्राडम के कथनानुसार 'सन् १९९९ में एक भयङ्कर शत्रु उत्तर देशों का सम्राट आकाशमार्ग से योरुप की धरणी पर अवतीर्ण होगा। इसकी भाषा, भेष सब ही विजित्र होंगे। हथियार आदि भी महा भयानक और संहारकारी होंगे। यह सम्राट उत्तर साइबीरिया की ओर से आवेगा। इसके बाद ही नौस्ट्राडम ने पेरिस के सर्वनाश और पतन की भी बात लिखी है। सन् ७०००

में संसार की पीठ पर महाप्रलय का ताण्डव नृत्य होगा और यह किसी महायुद्ध से नहीं बरन भयङ्कर जल प्रलय से संसार का अन्त हो जायेगा। गोबी का रेणु स्थल पुनः महाप्रशान्त समुद्र का रूप धारण करेगा। संसार का मानचित्र एकदम तब्दील हो जायगा। आज जहां द्वीप समूह हैं, वहां समुद्र की लहरें गरजती लरजतीं दिखाई देंगी। जल के स्थान पर पृथ्वी और पृथ्वी के स्थान पर भयङ्कर जल प्लावन का दुर्दृश्य देखा जायेगा, परन्तु, नौस्ट्राडम ने यह नहीं कहा कि मानव जाति इकदम लुप्त प्रायः हो जायेगी बल्कि कुछ पुरुष इस महाप्रलय से भी जीते बच रहेंगे और जो दुनियां को फिर से आबाद बनावेंगे।

२ हंगेरियन महिला ज्योतिषी बोरिस्का सिलविग्र की भविष्यवाणी।

एक हंगेरियन महिला ज्योतिषी की, जिसने कि सम्राट पञ्चमजॉर्ज की मृत्यु और सम्राट अष्टम एडवर्ड के सिंहासन परित्याग की बिलकुल ठीक भविष्यवाणी की थी, भविष्य-वाणी है कि यूरोप की राजनैतिक अशान्ति शीघ्र ही परिसीमा पर पहुँच जायेगी और ऐसा महायुद्ध छिड़ेगा जो १६४२ तक चलेगा। यह महिला मृत्यु, विनाश तथा दुनिया के रद्दोबदल की ऐसी भविष्यवाणियां करती है कि दर्शकों और श्रोताओं को पूरा विश्वास हो जाता है हालांकि खुद उसे अपनी इस शक्ति का कोई भान नहीं है। वह तो केवल इतना जानती है कि किसी अद्भुत अज्ञात शक्ति के द्वारा वह भविष्य को जान जाती है। उसकी भविष्यवाणियाँ अक्सर कितनी सच होती हैं, यह सिद्ध करने के लिये वह संवाद पत्रों की कतरनों की एक बड़ी फायल अपने पास रखती हैं।

३ प्रसिद्ध यूरोपीय दैवज्ञ शीरो की भविष्यवाणी

"यूरोप की ईसाई जाति यहूदियों को पेलिस्टाईन में आबाद करेंगी जिसके कारण इस्लाम के रहनुमां ईसाईयों के सख्त खिलाफ हो जायेंगे। टर्की, रूस की सहायता से पैलिस्टाइन को पुनः अधिकृत कर लेगा। ईसाई और यहूदी कौमें एक होंगी और फिर आपस में जोरों से लड़ बठेंगी। यह लड़ाई महायुद्ध का भयङ्कर रूप धारण करेगी। बृटिश साम्राज्य पर जगह २ आक्रमण शुरू हो जायेंगे। इंग्लैण्ड भारत को स्वतन्त्र कर देगा पर मज़हबी फिसाद तथा युद्ध से भारत तबाह हो जायेगा यहां तक कि हिन्दू, बौद्ध और मुसलमानों में बराबर २ विभक्त हो जायेगा। इटली, जर्मनी मिलकर फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध का दावानल प्रज्वलित करेंगे। अन्त में इंग्लैण्ड और जर्मनी मित्र बन जायेंगे। रूस चीन और तातारी लोगों की विशाल रण-वाहिनी तैयार करेगा। अमेरिका जापान और मेक्सिकों के युद्ध में जूझेगा। लम्बी जंग में बृटेन को भारी से भारी क्षति होगी। लन्दन का बहुतसा भाग और पूर्वी तट के अनेकानेक सुन्दर नगर हवाई आक्रमण से तहस नहस हो जायेंगे। 'शीरो' ने पृथ्वी के अंग भंग हो जाने के विषय में भी अत्यन्त विस्मय पूर्ण भविष्यवाणी की है। सन् ६६५ के भीतर ही यह महान दुर्घटना होने का योग बताया है। प्रशान्त महासागर से लेकर पनामा, मेक्सिको, संयुक्त राज्य तथा केनेडा आदि भूभागों में भूकम्प का दौरदौरा शुरू होगा। इससे मार्किन संयुक्त राज्य अमेरिका के कई बड़े शहर ज़मीदोज़ हो जायेंगे।

उत्तरी अटलांटिक महासागर में एक विशाल टुकड़ा निकल कर उत्तप्त जल धाराओं में परिणत हो जायेगा अमेरिका के दीप समूह शीत प्रधान हो उठेंगे। इंग्लैण्ड, आयरलैण्ड, डेनमार्क, नार्वे, रूस, जर्मनी आदि में शीत का इतना प्राबल्य होगा कि इन देशों में मनुष्य जाति आबाद न रह सकेगी। 'शीरो' ने अमेरिका और जापान के युद्ध के सम्बन्ध में भी लिखा है कि अमेरिका और जापान में ऐसा महासंग्राम छिड़ेगा जो वर्षों पर्यन्त जारी रहकर जन धन की अपार हानि का कारण होगा। अन्त में अमेरिका इधर मेक्सिकों पर कब्जा जमा लेगा और जापान के हाथ में सुदूर पूर्वी एशिया के गर्म मुल्क

आजायेंगे। बाद में चीन और जापान एक होकर पूर्व से सारी विदेशी कौमों को निकाल बाहर करेंगे। एशिया महाद्वीप का अधिक से अधिक भाग इन्हीं दो जातियों का भोग स्थल बन जायेगा।"

५ मिश्र देश की प्राचीन मीनार पर लिखी हुई भविष्यवाणी।

पादरी वाल्टरबेन ने इस भविष्यवाणी को पढ़कर एक लेख में खुलासा किया है कि "शीघ्र ही सत्य के प्रचार और अभ्युदय का युग आने वाला है। इसके पहले एक संसार व्यापी महायुद्ध होगा जिसमें सारी दुनियाँ सम्मिलित हो जायेगी। मीनार पर यह भी लेख है कि यह युद्ध १६३६ में आरम्भ होगा।"

६ वेजीलटिन की भविष्यवाणी।

स्पेन के एक साइन्स वेत्तामिस्टर जी वेजीलेटिन कहते है अब से छप्पन वर्ष में पृथ्वी समीपवर्ती ग्रहों से भिड़ जायगी और इनके इतने पास पास हो जाने का फल यह होगा कि वह उन गैसों को जिन पर हमारे जीवन का आधार है नष्ट कर देंगे और लाखों जीव जन्तु कुछ ही घन्टों में मृत्यु का ग्रास हो जावेंगे और बाकी उन्मत्त अवस्था में जीवित रहेंगे।

७ स्वामी विवेकानन्दी की भविष्यवाणी

श्री० स्व० स्वामी विवेकानन्दजी महाराज ने कुछ काल पूर्व निम्न आशय की भविष्यवाणी की थी :—

मित्रो! मैं आपको यह शुभ सम्बाद सुनाता हूं, इसे ध्यान पूर्वक सुनो तथा औरों को सुनाओ कि शीघ्र ही शुभ समय का आगमन होने वाला है। लोगों के दिल आशाओं से परिपूर्ण होजायेंगे, द्वेष, विरोध, छल, कपट, स्वार्थ के स्थान पर, प्रेम मुहब्बत, त्याग, ईमादारी, परोपकार भाई-चारे का बाहुल्य होगा। सद्ज्ञान की ऐसी उत्तम वर्षा होगी कि जनता के कुम्हलाये हुए दिल हरे होजायेंगे। जब वर्षा होती है तो गंदे नदी नाले भी नवीन जल से भर जाते हैं। इसी प्रकार शान्ति युग में जो प्रेम धर्म की बाढ़ आवेगी उसमें अधर्मी, अज्ञानी, अपराधी, स्वभाव के मनुष्य भी अपने दुर्गुणों की की छोड़कर सद्गुणों के अपने अन्दर प्रसन्नता पूर्वक धारण करेंगे।

———

राम कृष्ण परमहंस के उपदेश

सीखते २ समुद्र पार कर सकते हैं। इसी प्रकार ब्रह्मरूपी समुद्र में तैरने के लिये पहले बहुत से निष्फल प्रयत्न करने पड़ेंगे फिर पार हो सकोगे।

×

अपने कार्य को सिद्ध करने के लिये बहुत से प्रयत्नों की जरूरत है। दूध में मक्खन है। इस तरह चिल्लाने से मक्खन नहीं मिलेगा। दही जमाओगे। तब दूध चलाओगे, तब मक्खन मिलेगा इसी तरह ईश्वर से मिलना है तो आध्यत्मिक साधनों का ज्ञान करते रहो। हे ईश्वर! हे ईश्वर! कहने से क्या फायदा?

×

भङ्ग, भङ्ग कहने से नशा नहीं चढ़ता है। भङ्ग को पीसकर पानी में छानकर पीने से नशा चढ़ता हैं। हे ईश्वर! हे ईश्वर! कहने से कुछ नहीं ईश्वर की उपासना करते रहोगे तो लाभ होगा।

×

मनुष्य का अहंकार दूर होते ही उसे मोक्ष मिलता है।

×

जब एक पैना कांटा पैर में लग जाताहै। तो उसे वैसे ही दूसरे कांटे से निकाला जाता है। फिर दोनों को फैंक देते हैं। इसी तरह हमको सापेक्ष अज्ञान का नाश सापेक्ष ज्ञान से होना चाहिये। जब मनुष्य को सर्वोच्चब्रह्मका बोध हो जाता है। तो वह अज्ञान और ज्ञान दोनों द्वन्दों से रहित हो जाता है।

×

अगर तुम माया के सच्चे स्वरूप को पहचान लोगे, तो वह तुम्हारे पास से ऐसे भाग जायगी, जैसे मनुष्य को देखकर चोर भाग जाते हैं।

———

प्रलय की समीपता।

कुछ दिन पूर्व 'तेज' अखबार में संसार के प्रसिद्ध ज्योतिषियों की एक सम्मिलित भविष्य-वाणी छपी थी। वह इस प्रकार है:—

"नवम्बर सन् १९४१ ई० में एक स्याह सितारा निकलेगा, जो इस समय केवल दूर दर्शक यन्त्र से ही दिखाई देता है। खयाल है कि मई सन् १९४३ ई० को के पहले सप्ताह के बाद यह सितारा साफ तौर पर दिखाई देने लगेगा। अँधेरी रात में जब आकाश निर्मल होगा, तो उस समय तेज दिखाई देने वाले लोगों को 'एल. डी.देरिन' अर्थात् लाल रोशनी वाले तारे की दाहिनी तरफ एक छोटा सा तारा चमकता हुआ देख पड़ेगा। सन् १९४४ के बहार के मौसम में यह तारा भली भांति दिखाई देने लगेगा और धीरे-धीरे इसमें प्रकाश बढ़ना आरम्भ हो जायगा। यहाँ तक कि जनवरी सन् १९५३ ई० में जब हम आकाश की तरफ देखेंगे, तो हमको एक बहुत बड़ा रोशन सितारा मालूम होने लगेगा।

सन् १९३५ ई० में इसका पूर्व की ओर आना आरम्भ होगा और धीरे-धीरे मेष राशि में प्रवेश करेगा और वृहस्पति के पास जा पहुँचेगा। इस इस समय इस सितारे में इतना प्रकाश बढ़ जायगा कि वृहस्पति का प्रकाश भी इसके आगे मन्द हो जायगा।

जनवरी सन् १९५३ ई० से इस सितारे का आकार बड़े वेग से बढ़ने लगेगा। यहाँ तक कि बढ़ते-बढ़ते जुलाई सन् १९५३ ई० की यह चौद-हवीं रात के चाँद के बराबर हो जायगा। इसके बाद भी इसका आकार बढ़ता रहेगा और १ अगस्त सन् १९५३ को वह और भी बड़ा दिखाई देने लगेगा। यह सितारा बढ़ते-बढ़ते इतना बढ़ जाय तो उसके विनाशकारी लक्षण आरम्भ होंगे, जो इतने आश्चर्य-जनक और भयानक होंगे जिनसे अब तक न तो संसार का काम सुख और न आगे इससे अधिक विनाश की सम नहीं है। जुलाई सन् १९५३ ई० के मध्य से समु का लहरों की उथल-उथल आरम्भ होगी और इ तूफान से न्यूयार्क स्पेन, फ्रान्सिसेको आर सब ही समुद्र के किनारे के नगरों में पानी की बाढ़ आयेगी और फिर भी समुद्र की लहरें बराबर बढ़ती रहेंगी। १ अगस्त १९५३ ई० को यह लहरें समुद्र से ३०० फुट ऊँची हो जायगी और पानी की इस भयावनी दीवार के आक्रमणों से पृथ्वी का विनाश होने लगेगा, यहाँ तक कि वह सभी नगर जो समुद्र के पास स्थित हैं तबाह होजांयगे, कोई इमारत बाकी न बचेगी और न वहाँ के निवासी ही जीते जागते रह सकेंगे। जो लोग वहां से भाग कर ऊँचे स्थानों पर जाना चाहेंगे, उनका भी यह पानी की बाढ़ पीछा करेगी क्योंकि पानी बराबर बढ़ता चला जावेगा।

अब यह सितारा आकाश में पश्चिम की ओर चलता हुआ दिखाई देगा और इसका आकार भी दिन पर दिन बड़ा होकर चांद के आकार से दस-गुना हो जायगा. फिर यह सितारा पृथ्वी के पास आ जायगा और फिर यह होगा कि नित्य दो बार समुद्रों से बहुत बड़ी लहरें उठा करेंगी, जो एक महाद्वीप को डुबो देंगी। यहां तक कि पहाड़ों की चोटियों के सिवाय सारी पृथ्वी पानी में डूब जायगी वह लोग बड़े भाग्यशाली होंगे, जो किसी पहाड़ की चोटी या किसी दूसरे स्थान पर जा पहुँचेंगे और जब ११ अगस्त को वह नीचे की ओर देखेंगे तो जहाँ तक उनकी दृष्टि जायगी, पानी ही पानी लहराता हुआ देख पड़ेगा और जब आकाश की ओर देखेंगे तो भयानक सितारा चमक रहा होगा। इस सितारे के उदय होने के

बाद सूर्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा और सन् १९५२ ई० में जब हम इस सूर्य की तरफ देखेंगे महाद्वीप आकार घट जाने के कारण पृथ्वी से बहुत भोग ४थर मालूम पड़ेगा, यहां तक कि १ जनवरी १९५४ ई० को सूर्य का आकार आज कल के आकार से आधा दिखाई देने लगेगा। अब धीरे-धीरे इस प्रलयकारी बाढ़ का वेग घट जायेगा और फिर यह दशा होगी, कि पानी कहीं इन अवस्था में न दिखाई दे, जिधर भी दृष्टि जायगी बर्फ के तूमे ही देख पड़ेंगे।

———

स्वर्ग का रास्ता बड़ा कठिनाई से प्राप्त होता है। धन तो संसार में बहुत से छोड़ जाते हैं, किंतु नाम तो बिरला ही छोड़ता है।

× × ×

किसी दूसरे में दोष बतलाना स्वयं अपने दोषों का ही बतलाना है। लोग समझ लेते हैं। कि यह अपने दोषों को दूसरों पर रख कर प्रकट कर रहा है।

× × ×

संसार दर्पण के सदृश है, वह तुम्हारे रोने पर रोता है और हँसने पर हँसता है।

× × ×

किसी को पीठ पर रख कर पार करने के बजाय तैराना सिखा कर, वह खुद पार हो जाया करे, ऐसा बना दिया हो तो बहुत ही अच्छा है।

× × ×

दूसरों के द्वारा तुम अपना आदर चाहते हो, तो पहले दूसरों का आदर करो।

× × ×

सूम से सीखो, कि वह श्रेष्ठ को तो पास में रखता है और सड़े गले को फेंक देता है।

× × ×

महाराजा रणजीत सिंह की—भविष्य वाणी।

(सेठ रामशरणदासजी पिलखुआ)

हिन्दू महासभा के नेता श्री चन्द्रगुप्तजी वेदालङ्कार कुछ दिन हुए पिलखुआ पधारे थे। उस समय आपकी एक पुस्तक 'हिन्दू हृदय की धधकती ज्वाला' हमें मिली। उसमें पंजाब के महाराजा जी रणजीत सिंह की बड़ी सुन्दर भविष्यवाणी का वर्णन है, जिसका सारांश यह है:—

"परम पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय जी० महाराजा रणजीत सिंह जी जीवित थे। एक दिन एक अंगरेज एक नक्शे के साथ महाराज के दरबार में उपस्थित हुआ। नक्शे में कुछ लाल रंग था बाकी में सफेद। पूछने पर अग्रेज ने कहा कि जो भाग नकशे में लाल है वह अंगरेजों के आधीन हो चुका है और जो सफेद है वह बाकी बचा है। फिर कुछ झिझक कर बोला—'लेकिन बाकी सफेद भी लाल हो जायगा।'

इस समय श्री महाराजा के सेनापति शामसिंह भी पास बैठे थे वह बोले—महाराज! क्या इस तलवार के होते हुए भी ऐसा हो जायगा? महाराजा रणजीत सिंह ने कहा—हाँ इसके होते हुए भी।

उनको दुखी देखकर महाराज बोले-शामसिंह इसके लिए दुखी होना व्यर्थ है। होनहार को कोई रोक नहीं सकता। इसमें संदेह नहीं, कि एक बार यह पूरा नक्शा लाल होजायगा। पर जब समय पलटेगा, तब फिर से बदल जाय, शामसिंह ने पूछा—"ऐसा समय कब आवेगा?" महाराज ने उत्तर दिया कि इसके संबंध में ठीक ठीक तो कुछ कहा नहीं जा सकता पर मुझे ऐसा जान पड़ता है कि १०० वर्ष बादल हालत बदलेगी और यहाँ के निवासी अपना शासन आप सँभालने योग्य होजांयगे। उस समय वे स्वभाग्य निर्णय का अधिकार पा सकेंगे। -सतयुग से

अद्भुत भविष्यवाणी !

सन् १५५५ ई० में नोस्त्रदामसने एक पुस्तक प्रसिद्ध की थी, जिसका शीर्षक था, 'माइकेल डी नोस्त्रदामस की शताब्दियाँ और सच्ची भविष्य-वाणियाँ' और जिसमें आश्चर्यजनक भविष्यकथनों का संग्रह था। The News Review नामक एक नियतकालिक में उसका संक्षिप्त विवरण दिया है। आधुनिक विश्वव्यापी महासमर के सम्बन्ध में इसमें यों कहा है—

"१९४० में हमारे सम्मुख एक भीषण संकट-पूर्ण दशा उपस्थित होगी, जो १९४४ तक प्रचलित होगी। इसी काल में अनेक शासन संस्थायें मटियामेट हो जायेंगी और विशेष रूप से फ्रान्स में अवस्थित सरकार को भीषण क्षति उठानी पड़ेगी। १९४० में योरोप रणचण्डी की रंगभूमि में परिवर्तित बन जायगा। जर्मनी एवं इटली में अधिनायकों या तानाशाहों का शासन प्रस्थापित होगा। फ्रान्स शत्रुदल से परास्त हो विरोधियों के चङ्गुल में फँस जायेगा"।

इस द्रष्टा के सम्बन्ध में उक्त मासिक पत्र में यह जानकारी दी गई है। फ्रान्स के सेंट रेमी नामक स्थान में नोस्त्रदामस का जन्म १५०३ ई० स के दिसेम्बर मास के १३ वें दिनांक को हुआ। इनके माता-पिता फ्रेंच-यहूदी वंश के थे। छुटपन से ही विज्ञान, दर्शन एवं वैद्यक शास्त्र में ये दिल-चस्पी लेने लगे। वैद्य की योग्यता प्राप्त करने के उपरान्त शीघ्र ही प्लेग का बड़ा भारी प्रकोप हुआ और इन्हें पर्याप्त ख्याति मिल गई। इनका दावा था, कि उस भीषण रोग से छुटकारा पाने का उपाय इन्हें विदित था, पर इनकी मृत्यु के उपरान्त वह सुगुप्त उपाय विलुप्त हुआ।

मिलन नामक नगर में सर्वप्रथम इन्होंने अपनी प्रेक्षणीय भविष्यवाणी के कथन का सूत्रपात किया। एक दिन ये नगरी में संचार कर रहे थे कि, एक भिक्षुओं का दल इनके सम्मुख आ उपस्थित हुआ। उस दल में (Felix Peretti) फेली पेरेत्ती नामक एक युवक संन्यासी था। वह निर्धन माता पिता का पुत्र था और उस समय उसे तनिक भी प्रसिद्ध नहीं मिली थी। नोस्त्रदामस के साथियों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ, जब वे तुरन्त उस अज्ञात युवक संन्यासी के पैरोंपर पड़कर बड़े आदर से अभिवादन करने लगे। जब उन से प्रश्न किया कि, एक साधारण व्रती के लिए उसने ऐसा सुख नहीं। आदर क्योंकर दर्शाया ? तो उत्तर मिला 'मैंने भावी का पोपमहोदय को प्रणाम किया है।' प्रेक्षक एवं अन्य उपस्थित लोगों की राय हुई कि, वे पागल होकर ऐसी बातें कर रहे हैं। पर १५८५ में पंचम सेक्टस पोप के नाते (Peretti) पेरेत्ती की प्रस्थापना हुई।

असन्देह नोस्त्रदामसने भूलें की हैं, परन्तु हैं वे बहुत ही अल्प एवं कचित् पाये जाने वाले। गल-तियाँ छोटी स्वरुप की है, ऐसा प्रतीत होने में कोई देरी नहीं लगती है। उदाहरणार्थ, उन की यह भविष्यवाणी कि अगस्त १९३९ में वर्तमान महा-संग्राम का सूत्रपात होगा, कुछ ही दिनों से न्यून है। उन का यह भविष्यकथन भी अशुद्ध था कि, १९४० में स्विटझरलंड की राह से फ्रांस पर धावा किया जायगा और जिस जर्मन तानाशाह की बदौ-लत समूचे योरप में रणचंडी का ताण्डव नृत्य शुरू होगा, उसको उन्होंने 'हिस्टर' (Hister) नाम दिया है। वास्तव में यह है 'हिटलर'

वर्तमान महायुद्ध १९४४ में समाप्त होगा, पर १९४५ में पुनरपि फ्रांस एवं इटली के मध्य युद्ध छिड़ जायगा। इस अवसर पर फ्रांस का नेता नूतन एवं प्रभावशाली नरेश होगा और इन्हीं की तेजस्विता के फलस्वरूप फ्रांस इटली को परास्त कर देगा। फ्रांस की सीमा राइन नदीतक बिस्तृत हो जायगी और वह इटली एवं स्पेन पर शासन प्रस्थापित करेगा।

१५६६ ई. स में जौलाई मास में रात्रि के समय उन्होंने अंतिम भविष्यवाणी की अपने सेवक से, जिसने रात्री के समय प्रातःकाल तक शुभरात्री की आकांक्षा प्रकट की, उन्होंने कहा 'नहीं जी, सूर्योदयके समय मैं यहाँ न रहूँगा। उसी रात्रि को निद्रा में उनने शरीर का त्याग किया।—वैदिक धर्म

लार्ड टेनासिन की भविष्यवाणी

महाद्वीप
भोग स्थ

सन् १८४५ ई० में इग्लेण्ड के संसार प्रसिद्ध महाकवि लार्ड टेनसिन एक पद्य द्वारा वर्तमान महा-महायुद्ध के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की थी। वह आज बिलकुल सच हो रही है। आज कल जिन हवाईजहाजों, बमों, गैसों का प्रयोग हो रहा है उनका सन् ४५ में नाम भी न था फिर भी उस महाकवि ने अपनी दिव्य दृष्टि से भविष्य को ठीक ठीक जान लिया था। नीचे वह पद्य भविष्यवाणी दी जा रही है।

For I dipped inta the future
For as human eye could see,
Saw the vision of the word.
And all the wonders that would be.
Saw the heavn's fill with commerce,
argosies or magic salls.
Pilots of the purple twilight dropp-
Down their costly bales.　　ing
Saw tho heavens fill with shouting
there rained the ghastly dew.
From the nation's airly navies,
grappling in the central blue.
Till the war drnm throlled no longer
And the battle flags were furled
In the parliament of man the Federa-
tion of the world.
There the common seuse of the most
shall hold fretful realmin in awe
And kindly earth she l slumber
leapt in universal law.

अनुवाद: मैंने भविष्यकाल का स्वप्न देखा जहां तक कि मानवी आँख देख सकती है, मैंने जगत् की अद्भुत और अनुपम बातें देखी। देखा कि:—" आकाश व्यापार सामग्री से भरपूर है और बड़े बड़े व्यापारिक जहाज बहुमूल्य वस्तुएं जल्द जल्द एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जा रहे हैं।

देखा कि " आकाश शोर गुल कुलाहल और भिन्न भिन्न शब्दों की गूंज से भर गया है और भीषण बम-वर्षा हो रही है और देखा कि भिन्न २ देशों के वायुयान जो आकाश मण्डल में गुथे हुए युद्ध में सलग्न हैं एक दूसरे पर बम बरसा रहे हैं। जब तक उनकी लड़ाई समाप्त न हुई यह सब कुछ देखा परन्तु परिणाम यह हुआ कि " अन्त में जङ्गी बाजे बन्द होगये और लड़ाई के कपड़े (वर्दियाँ) लपेट कर रख दिये गये, आदमी आदमी बनकर बैठे। आपस में विचार करके उन्होंने संसार को मेल मिलाप और शांति का संदेश दिया जहां सबकी सम्मति से एक अंतर राष्ट्रीय राज्य संगठन स्थापित हुआ और धरती माता उस समय सुख की नींद सोई।"

इससे प्रतीत होता है कि इस महायुद्ध के पश्चात् श्रेष्ठ युग आवेगा। लोग द्वेष, कलह, स्वार्थ, अपहरण, शोषण अत्याचार आदि पापों को छोड़ कर परस्पर प्रेम पूर्वक सत्य और न्याय का व्यवहार करते हुए रहेंगे जिससे यह पृथ्वी स्वर्ग के समान आनन्ददायक हो जावेगी। उस समय को सतयुग कहने में किसी को क्या आपत्ति होगी ?

संवत २००० और युग परिवर्तन

(ले० — श्री० सत्यभक्त, जी संपादक 'सतयुग')

इस समय संवत् २००० ने काफी महत्व प्राप्त कर लिया है। कुछ भविष्यवक्ताओं की कृपा से,— जिनमें सच्चे और झूठे दोनों ही तरह के शामिल हैं—सर्व-साधारण में यह ख्याल फैल गया है कि संवत् २००० में पृथ्वी की काया पलट हो जायगी, अवतार प्रकट होगा और सर्वत्र सतयुग वर्तने लगेगा, जिससे मनुष्य मात्र अत्यन्त सुख पूर्वक रहने लगेंगे।

मेरे विचार से भी संवत् २००० में युग परिवर्तन की सम्भावना है, पर उसको लोगों ने जो बढ़ा हुआ और काल्पनिक रूप दिया है वह भ्रमोत्पादक है। मेरा तो ख्याल है कि जो लोग १ अगस्त १९४३ को अवतार के प्रकट हो जाने और पूर्ण रूप से सतयुग का साम्राज्य कायम हो जाने की दावा करते हैं उनको आठ महीने बाद ऐसी डींगें मारने का मौका न मिलेगा और शरमिन्दा होना पड़ेगा। मैं यह नहीं कहता कि इस तरह के सभी लोग धूर्त या स्वार्थी हैं, पर इतना तो कहना ही पड़ेगा कि वे बहुत भोले हैं और युग-परिवर्तन जैसे गम्भीर विषय को समझने के लिये अयोग्य हैं।

मैंने अपनी सामान्य बुद्धि से, तथा प्राचीन भविष्यवाणियों से सहायता लेकर इस विषय पर जितना बिचार किया है उससे मुझे यही प्रतीत होता है कि संवत् २००० एक बड़े महत्व का वर्ष होगा, जिसकी चर्चा इतिहास में सैकड़ों बर्ष तक होती रहेगी। उसमें जो घटनायें होंगी उनसे युग-परिवर्तन की सत्यता सब लोगों पर प्रकट हो जायगी और यह निश्चित रूप से दिखलाई पड़ने लगेगा कि संसार का मौजूदा रूप अब कायम नहीं रह सकता।

पर यह कहना या ख्याल करना कि संवत् २००० में सब लड़ाई झगड़े खतम होकर सुख शान्ति का समय आ जायगा कतई ठीक नहीं। यह कहना भी कि इस वर्ष में तमाम पापियों का नाश हो जायगा और केवल धर्मात्मा ही बच रहेंगे एक ख्याली पुलाव पकाना है। सबत् २००० में युग परिवर्तन का क्या स्वरूप होगा इसके विषय में कुछ लोगों से बातें करते हुये मेरे दिमाग में एक उपमा आई थी।

वह यह कि संवत् २००० में नये युग का आगमन उसी प्रकार होगा जिस प्रकार २५ दिसम्बर को बड़ा दिन माना जाता है। अगर किसी साधारण मनुष्य या स्त्री से २८ या ३० दिसम्बर को भी पूछा जाय कि 'क्या दिन बड़ा हो गया' तो वह कभी इसे ठीक न बतलायेंगे। वे लोग एक डेढ़ महीने बाद ही यह अनुभव कर सकते हैं कि दिन कुछ बड़ा हुआ है और मौसम में भी अन्तर पड़ने लगा है।

इसी प्रकार संवत् २००० में वर्तमान स्थिति की गम्भीरता और भयंकरता अपनी चरम सीमा पर पहुँच जायगी जिससे अधिक बढ़ना सम्भव न होगा। पर इसके बाद भी बहुत समय तक संसार में मार काट और नाश के कार्य होते रहेंगे और कोई सुख की नींद न सो सकेगा। हम यह नहीं कहते कि वर्तमान योरोपीय महासागर अन्त तक इसी तरह चलता रहेगा या मेंहगी का ऐसा ही रूप बना रहेगा। नाश के और भी बहुत से रास्ते हो सकते हैं जिनको गिनाने की यहाँ जरूर नहीं।

हमारा अनुमान है कि यह नाश का सिलसिला कम से कम पन्द्रह-बीस साल तक भिन्न-

भिन्न रूपों में चलता रहेगा जिसके फल से पृथ्वी की आबादी बहुत कम हो जायगी और किसी के मन में युद्ध का हौंसला शेष न रहेगा। उसके बाद नये सिरे से दुनियां का संगठन होगा जिसमें वर्तमान राजनैतिक, आर्थिक, समाजिक, धार्मिक सब प्रकार के विचार बदल जायेंगे और मनुष्यों में मौजूदा समय की अपेक्षा बहुत अधिक एकता और समानता उत्पन्न हो जायगी। इस कार्य का संचालन 'अवतार' करेगा या कोई हमारे जैसा साधारण मनुष्य यह तो मैं नहीं कह सकता पर इतना मुझे दिखलाई पड़ता है कि उस समय तक योरोपियन देशों की प्रधानता नष्ट हो जायगी और उनकी जगह अमरीका दुनियां का नेता माना जाने लगेगा। एशिया के प्रति उसका व्यावहार और आचरण भी योरोप वालों की वनिस्वत् मित्रता और सहानुभूति का होगा और इसके फल से संसार में से बहुत समय के लिये आपस की कलह और युद्धों का अन्त होकर एक विश्व सन्घ की स्थापना हो सकेगी।

———

स्वर्ण की अग्नि से, और दृढ़ मनुष्य की विपरीत समय से परीक्षा होती है।

× × ×

सन्तोष का फल मधुर है।

(श्री नारायणप्रसाद जी तिवारी 'उज्ज्वल')

किसी कसाई के यहां एक बकरा और कुत्ता था, बकरे वह को अच्छे स्थान पर बांध कर नित्य हरी-हरी घास खिलाता, उसके रहने का स्थान साफ किया करता था। कुत्ते का सूखे रूखे टुकड़े दे दिया करता था। धूप, वर्षा, शीत का कष्ट सहन करते हुए, सूखे टुकड़े पाकर अपने मालिक की सेवा करता हुआ कुत्ता अपने मनमें विचार करने लगा, मैं इतना कष्ट सहन कर मालिक की सेवा करता हूँ और बकरा जो कुछ भी सेवा नहीं करता उसे सुस्वाद भोजन मिला करते हैं। इस प्रकार के बिचारों से इश्वर के अस्तित्व अथवा उसके न्याय पर शङ्का होने लगी।

बकरा दिन-दिन मोटा होने लगा, जिससे कुत्ते की ईर्षा भी बढ़ने लगी। जब बकरा खूब तैयार होगया तो कुत्ते ने एक दिन देखा कि कसाई ने अपनी छुरी उसकी गर्दन पर फेरदी और मांस बिक्रय कर जितना उस बकरे के लिये व्यय किया था, उससे कई गुना लाभ कमाया।

कुत्ते ने यह देखकर नास्तिक भाव से घृणा कर यह विश्वास किया कि ईश्वर न्यायी है, हराम की कमाई किसी दिन इसी प्रकार जाने पर संकट लाती है। रूखी सूखी खाकर सन्तोष से जीवन व्यतीत करने का फल मीठा होता है।

———

सतयुग की अन्तर्दशा।

यह बात अनेक प्रमाणों से सिद्ध होती है कि सवत् २००० में कलियुग को आरम्भ हुए ४४०० वर्ष के करीब होते हैं। निर्णय सिन्धु में ऐसा उल्लेख है कि कलियुग में ४४०० वर्ष समाप्त होने पर नया युग आरम्भ होगा।

चत्वार्याब्द सहस्राणि चत्वार्याब्द शतानिच।
कलेर्यदागमष्यन्ति तदापूव युगाश्रिता॥
—निर्णय सिन्धु पूर्वार्द्ध

अर्थ—कलियुग के ४४०० वर्ष चले जाने पर पहले युग के से अर्थात् द्वापर युग के से काम होने लगेंगे।

प्राचीन इतिहास में इस बात के अनेक प्रमाण मिल सकते हैं कि एक युग में दूसरे युग के अन्तर भी प्रचलित होते रहते हैं। सत् युग में हिरण्य कष्यपु, त्रेता में रावण, द्वापर में कंस जैसे अधर्मी राजाओं के अनीति पूर्ण समय बहुत समय तक रहे हैं यद्यपि उन युगों का धर्म उत्तम था फिर भी बुरे लोगों की बाहुल्यता होने के कारण बुरा समय वर्तने लगा। नियम है कि जैसे एक विंशोत्तरी दशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा वर्तती है एवं एक योगिनी दशा में अन्य अन्तर्दशाऐं आती रहती हैं वैसे ही एक युग के अन्तर्गत अन्य युगों के समय भी आते रहते हैं। चन्द्रमा एक राशि पर सवा दो दिन रहता है परन्तु इतने ही समय में सवा दो दो घन्टे की अनेक लग्न राशियाँ व्यतीत हो जाती हैं। इसी प्रकार भले युगों में बुरे और बुरे युगों में अनेक युगों के अन्तर समयानुसार वर्तते रहते हैं।

महाभारत शान्ति पर्व ६६ - ७६ में युधिष्ठिर से कहा है।—

कालोवा कारण राशो राजा वा काल कारणम्।
इति ते संशयोयाभूद् राजा कालस्य कारणम्॥

अर्थात्—हे युधिष्ठर तुम ऐसी द्विविधा मत करो कि समय के भले बुरे होने से राजा अच्छे बुरे होते हैं या राजा के कारण समय भला बुरा हो जाता है। वास्तव में राजा ही समय का कारण है। जैसा राजा होता है वैसा ही समय बदल जाता है।

राजा कृतयुग सृष्टा त्रेताया द्वापरस्यच।
युगस्यच चतुर्थस्य राजा भवति कारणम्॥६८॥
कृतस्य कारणात् राजा स्वर्गमत्यन्त मश्नुते।
त्रेताया कारणात राजा स्वर्गनात्यन्त मश्नुते॥
प्रवर्तनाद् द्वापरस्य यथा भाग मुपाश्नुते।
कलेप्रवर्तना द्राजा पाप मत्यन्त मश्नुते॥

महाभारत शान्ति अ० ६६

अर्थात्—सत् युग, त्रेता, द्वापर और कलियुग का निर्माण करने वाला राजा ही होता है। राजा चाहे जैसे युग उपस्थित कर सकता है, जिस राजाने सत युग का समय उपस्थित किया हो वह अत्यन्त स्वर्गन्तो पहुँचता है जिस राजाने त्रेता युग उपस्थित किया हो उसे साधारण स्वर्ग मिलता है। जिस राजा के आचरण से द्वापर युग उपस्थित हो वह जैसा करता है वैसा भोगता है परन्तु जिस राजा के कारण कलियुग के से आचरण होने लगे वह अन्त्यन्त पापी होता है।

उपरोक्त श्लोकों में यह स्पष्ट हो जाता किहै यद्यपि युगों की लम्बी काल गणना क्रम पूर्वक चलती रहती है तो भी बीच बीच में राजा, तथा जनता के सहयोग से अन्य युगों की अन्तर्दशा भी उपस्थित होती रहती है। जो लोग काल गणना में भ्रम से फैली हुई रूढ़ि के अनुसार कलियुग के चार लाख बत्तीस हजार वर्ष का मानते हैं और अभी सत् युग को दूर समझते हैं उन्हें जानना चाहिये कि ऐसा होने पर भी 'निर्णय सिन्धु' के प्रमाण से सम्वत् २००० के बाद अच्छे युग की अन्तर्दशा का आगमन होगा और बुरा समय व्यतीत होकर श्रेष्ठ काल की स्थिति उत्पन्न हो जायगी।

———

१९४३ में विश्व--संग्राम समाप्त होगा ?

क्या १९४३ में विश्व में शांति स्थापित होगी ? इसका जबाव 'एस्ट्रालाजिकल मैगज़ीन' बंगलौर के सम्पादक ने 'हां' में दिया है। ग्रहों की स्थिति से मालूम होता है, कि मंगल का जोर होने से नया साल संसार के लिये पीड़ादायक है। भीषण संग्राम होंगे, अकाल का राज्य रहेगा, भूकम्प, आँधी और तूफान का जोर रहेगा और भीषण नर संहार होगा।

'युद्ध' का भविष्य क्या है ? रूस को शायद दो मोर्चों पर लड़ना पड़े, मगर अन्तमें उसकी विजय होगी। जर्मनी, इटली और यूरोप के अन्य देशों में गृह-युद्ध होंगे व भीषण दुर्भिक्ष पड़ेगा। जापान में नारकीय घटनायें घटेंगी और उनका जापान के भविष्य पर गहरा प्रभाव रहेगा। जापान की महत्वाकांक्षाओं पर तुषारपात होगा। मित्र राष्ट्र खोये अड्डों और देशों को पुनः विजय करके जय लाभ करेंगे। इस साल अनेक निर्णयात्मक युद्ध होंगे और इनमें मित्र राष्ट्रों का पलड़ा भारी रहेगा और विजयी होंगे और युद्ध से पीड़ित संसार में अन्तमें शांति स्थापित होगी।

भारत का अगला साल कैसा गुजरेगा ? अराजकता फैलेगी। राजनीतिक गति अवरोध को दूर करने के प्रयत्नों के सफल होंने की संभावना कम है। राष्ट्रीय नेताओं के जेल से छूटने की आशा है। यह भी संभव है कि इस साल भारत को वास्तविक सत्ता प्राप्त हो जाय।

१९४३ का भविष्य।

इस समय युद्ध, अकाल, बाढ़ और बीमारी अपना शिकार ढूंढ़ने में एक दूसरे से प्रतियोगिता कर रहे हैं। क्या संवस्त संसार में १९४३ के अन्दर शांति स्थापित होगी ? इसका जबाब 'एस्ट्रालाजिकल मेगज़ीन' ने इस प्रकार दिया है:—

ग्रहों की स्थिति।

राजा	चन्द्रमा
मन्त्री	मंगल
शस्याधिपति	शुक्र
धन्याधिपति	बृहस्पति
मेघाधिपति	मंगल
रसाधिपति	सूर्य
निरसाधिपति	शुक्र
सेनाधिपति	मंगल
अर्घाधिपति	मंगल
पशवाधिपति	श्रीकृष्ण

इससे स्पष्ट है कि मङ्गल चार पदों का अध्यक्ष हैः— मन्त्री, मेघाधिपति, सेनाधिपति और अर्घाधिपति। सूर्य निम्न कक्षा में चला गया है। फलतः राजा और शासक नाम मात्र के होंगे और वास्तविक शक्ति सेना के हाथ में होगी। चन्द्र राज्य परिवार का होते हुए भी नीच ग्रह के साथ पड़ा है। ग्रह राज्य के महत्वपूर्ण विभाग मङ्गल के पास हैं।

मङ्गल का प्रभाव।

नया साल मकर लगन के साथ आरंभ होता है। इसका फल संस्कृत ग्रन्थों के अनुसार यह होगा कि उत्तरीय देशों में महान् विनाश होगा। राजा और राज्य परिवारों को कष्ट होगा। पश्चिमी देशों में फसल अच्छी होगी। वर्षा ठीक न होगी। मङ्गल ही इस साल ग्रह राज्य का प्रधान मन्त्री और प्रधान सेनापति है। इस कारण इसका क्या नतीजा होगा यह सहज ही में अन्दाज किया जा सकता है। मङ्गल खूनी लड़ाइयाँ, भूकंप, ज्वालामुखी पहाड़ों का फटना, सामुद्रिक तूफान राजाओं में ग़लतफहमी

का कारण होगा। अतः इस साल भयङ्कर रक्तपात होगा। सब ग्रह राहू और केतू के बीच में इस साल के शुरू में आये हैं और सूर्य का बुध के साथ होना अनिष्ट कर है। नीरसाधिपति केन्द्र में है। अतः रुई, रेशम और धातुओं के व्यापार में कुछ सुधार होगा। गुड़, चीनी, नमक, मक्खन, बिनौला और महँगे होंगे और कहीं कहीं अप्राप्य हो जायेंगे। अन्नों का भाव बहुत अस्थिर रहेगा और विनाशक ऊँचाई पर पहुँच जायगा। वर्षा का मालिक इस साल मङ्गल है, इस लिये हवा ज्यादा चलेगी मगर वर्षा अपर्याप्त होगी।

मङ्गल का प्रभाव।

मङ्गल के सेनापति होने से संसारभर में बुराई का जोर होगा। शस्य नष्ट हो जायगा। राजाओं के बीच विकराल युद्ध होंगे शुक्र चल अवस्था में है। अतः बुराई तेजी से फैलेगी स्त्रियों की शिकायतें ज्यादा सुनाई देंगी। धर्म प्रचारकों की आवाज ज्यादा कमजोर पड़ जायेगी।

मृत्यु।

बृहस्पति का शनि से तीसरे लग्न में होना भी खराब है। इसका फल यह होगा कि लङ्का और विन्ध्याचल के बीच के देशों में लोगों की बहुत मृत्युएँ होंगी। भूमध्य रेखा और २० देशांश के बीच अर्थात् दक्षिण भारत, लङ्का, वर्मा, हिन्द चीन, स्याम, मलाया, मिश्र और फ्रेंच पश्चिमी अफ्रीका, वेस्ट इण्डीज, पनामा नहर में बहुत मौतें होंगी। अक्तूबर १९४३ में दुर्भिक्ष, अन्न का भाव और आतंक होगा।

मित्रराष्ट्र विजयी होंगे।

१९४० में हमने कहा था कि मित्रराष्ट्र अन्तमे बहुत मुसीबतें उठाकर विजयी होंगे। १९४३ के शुरू में बृहस्पति वक्रगति होकर मई १९४३ में कर्क राशि में प्रविष्ट होगा। इस लिये जब तक बृहस्पति सीधी चाल में नहीं आता तब तक मित्रराष्ट्रों को कुछ पराजयों का मुँह देखना पड़ेगा, लेकिन बृहस्पति के ठीक होते ही हालत सुधर जायगी। १९४३ ई० अग्निकाण्डों, भूकंपों, विस्फोटों, सम्पत्ति और जीवन के विनाश के लिये प्रसिद्ध होगा। मङ्गल के सेनापति होने से लड़ाई का जोर रहेगा। फलतः आदमी बड़ी तादाद में मरेंगे। दुर्भिक्ष और बीमारी से भी लाखों आदमी मरेंगे। जनता उत्तेजित रहेगी और मजदूरों के झगड़े दुनियां भर में जोरों पर होंगे। अराजकता का सर्वत्र राज्य रहेगा और शान्त और गंभीर विचारों और सलाहों का निरादर होगा। जंगलों, पुराने किलेबन्दियों और रण-क्षेत्रों में प्राणों की महान् बलि दी जायेंगी। दुर्भिक्ष से नागरिक लोग ऊब उठेंगे और भारी मुसीबतें उठायेंगे। बड़ी-बड़ी व्यापारिक फर्में दिवालिया हो जायेंगी और उनका नाम भी मिट जायेगा।

भारत में।

भारत में अराजकता फैलेगी। राजनीतिक अवस्था अस्थिर रहेगी। प्रभावशाली लोगों द्वारा राजनीतिक गति अवरोध दूर करने के लिये प्रयास किए जावेंगे, मगर उनकी सफलता की आशा बहुत कम है। बृहस्पति के कर्क मे प्रविष्ट होने के साथ भारत की हालत कुछ सुधर जायगी और शायद राष्ट्रीय नेता जेलों से छूट जावें। गम्भीर, नाजुक स्थितियों में से कुछ वास्तविक सत्ता मिल जायगी। पाकिस्तान की आवाज और अधिक बुलन्द होगी, लेकिन कभी भी अस्तित्व में आयगा।

पनडुब्बियों का उपद्रव।

इङ्गलैण्ड में लोग अधिक आशावान होंगे और अंग्रेज़ अपनी वीरता और धीरता से शत्रुओं पर विजयी होंगे। अटलांटिक में पनडुब्बियों का उपद्रव बढ़ेगा। यूरोप खण्ड मे बीमारी, अकाल और सख्त सर्दी का जोर रहेगा। जर्मनी, इटली और नाजी अधिकृत देशों मे व्यापक गृह-युद्धों के होने की सम्भावना है। जर्मनी के लिये यह साल निश्चित रूप से खराब है। जर्मन सेना को भारी क्षति पहुंचेगी। हिटलर का भाग्य सूर्य अस्त हो जायगा।

१९४३ में विश्व--संग्राम समाप्त होगा ?

क्या १९४३ में विश्व में शांति स्थापित होगी ? इसका जवाब 'एस्ट्रालाजिकल मैगज़ीन' बंगलौर के सम्पादक ने 'हां' में दिया है। ग्रहों की स्थिति से मालूम होता है, कि मंगल का जोर होने से नया साल संसार के लिये पीड़ा-दायक है। भीषण संग्राम होंगे, अकाल का राज्य रहेगा, भूकम्प, आँधी और तूफान का जोर रहेगा और भीषण नर संहार होगा।

'युद्ध' का भविष्य क्या है ? रूस को शायद दो मोर्चों पर लड़ना पड़े, मगर अन्तमें उसकी विजय होगी। जर्मनी, इटली और यूरोप के अन्य देशों में गृह-युद्ध होंगे व भीषण दुर्भिक्ष पड़ेगा। जापान में नारकीय घटनायें घटेंगी और उनका जापान के भविष्य पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। जापान की महत्वाकांक्षाओं पर तुषारपात होगा। मित्र राष्ट्र खोये अड्डों और देशों को पुनः विजय करके जय लाभ करेंगे। इस साल अनेक निर्णयात्मक युद्ध होंगे और इनमें मित्र राष्ट्रों का पलड़ा भारी रहेगा और विजयी होंगे और युद्ध से पीड़ित संसार में अन्तमें शांति स्थापित होगी।

भारत का अगला साल कैसा गुजरेगा ? अराजकता फैलेगी। राजनीतिक गति अवरोध को दूर करने के प्रयत्नों के सफल होने की संभावना कम है। राष्ट्रीय नेताओं के जेल से छूटने की आशा है। यह भी संभव है कि इस साल भारत को वास्तविक सत्ता प्राप्त हो जाय।

१९४३ को भविष्य।

इस समय युद्ध, अकाल, बाढ़ और बीमारी अपना शिकार ढूंढ़ने में एक दूसरे से प्रतियोगिता कर रहे हैं। क्या संत्रस्त संसार में १९४३ के अन्दर शांति स्थापित होगी ? इसका जवाब 'एस्ट्रालाजिकल मेगज़ीन' ने इस प्रकार दिया है:—

ग्रहों की स्थिति।

राजा	चन्द्रमा
मन्त्री	मंगल
शस्याधिपति	शुक्र
धन्याधिपति	बृहस्पति
मेघाधिपति	मंगल
रसाधिपति	सूर्य
निरसाधिपति	शुक्र
सेनाधिपति	मंगल
अर्घाधिपति	मंगल
पश्वाधिपति	श्रीकृष्ण

इससे स्पष्ट है कि मङ्गल चार पदों का अध्यक्ष हैः— मन्त्री, मेघाधिपति, सेनाधिपति और अर्घाधिपति। सूर्य निम्न कक्षा में चला गया है। फलतः राजा और शासक नाम मात्र के होंगे और वास्तविक शक्ति सेना के हाथ में होगी। चन्द्र राज्य परिवार का होते हुए भी नीच ग्रह के साथ पड़ा है। ग्रह राज्य के महत्वपूर्ण विभाग मङ्गल के पास हैं।

मङ्गल का प्रभाव।

नया साल मकर लगन के साथ आरंभ होता है। इसका फल संस्कृत ग्रन्थों के अनुसार यह होगा कि उत्तरीय देशों में महान् विनाश होगा। राजा और राज्य परिवारों को कष्ट होगा। पश्चिमी देशों में फसल अच्छी होगी। वर्षा ठीक न होगी। मङ्गल ही इस साल ग्रह राज्य का प्रधान मन्त्री और प्रधान सेनापति है। इस कारण इसका क्या नतीजा होगा यह सहज ही में अन्दाज किया जा सकता है। मङ्गल खूनी लड़ाइयाँ, भूकंप, ज्वालामुखी पहाड़ों का फटना, सामुद्रिक तूफान राजाओं में ग़लतफ़हमी

का कारण होगा। अतः इस साल भयङ्कर रक्तपात होगा। सब गृह राहू और केतू के बीच में इस साल के शुरू में आये हैं और सूर्य का बुध के साथ होना अनिष्ट कर है। नीरसाधिपति केन्द्र में है। अतः रुई, रेशम और धातुओं के व्यापार में कुछ सुधार होगा। गुड़, चीनी, नमक, मक्खन, बिनौला और महँगे होंगे और कहीं कहीं अप्राप्य हो जावेंगे। अन्नों का भाव बहुत अस्थिर रहेगा और विनाशक ऊँचाई पर पहुँच जायगा। वर्षा का मालिक इस साल मङ्गल है, इस लिये हवा ज्यादा चलेगी मगर वर्षा अपर्याप्त होगी।

मङ्गल का प्रभाव।

मङ्गल के सेनापति होने से संसारभर में बुराई का जोर होगा। शस्य नष्ट हो जायगा। राजाओं के बीच विकराल युद्ध होंगे शुक्र चल अवस्था में है। अतः बुराई तेजी से फैलेगी स्त्रियों की शिकायतें ज्यादा सुनाई देंगी। धर्म प्रचारकों की आवाज ज्यादा कमजोर पड़ जायेगा।

मृत्यु।

वृहस्पति का शनि से तीसरे लग्न में होना भी खराब है। इसका फल यह होगा कि लङ्का और विन्ध्याचल के बीच के देशों में लोगों की बहुत मृत्युएँ होंगी। भूमध्य रेखा और २० देशांश के बीच अर्थात् दक्षिण भारत, लङ्का, वर्मा, हिन्द चीन, स्याम, मलाया, मिश्र और फ्रेंच पश्चिमी अफ्रीका, वेस्ट इण्डीज, पनामा नहर में बहुत मौतें होंगी। अक्तूबर १९४३ में दुर्भिक्ष, अन्न का भाव और आतंक होगा।

मित्रराष्ट्र विजयी होंगे।

१९४० में हमने कहा था कि मित्रराष्ट्र अन्तमें बहुत मुसीबतें उठाकर विजयी होंगे। १९४३ के शुरू में वृहस्पति वक्रगति होकर मई १९४३ में कर्क राशि में प्रविष्ट होगा। इस लिये जब तक वृहस्पति सीधी चाल में नहीं आता तब तक मित्रराष्ट्रों को कुछ पराजयों का मुँह देखना पड़ेगा, लेकिन वृहस्पति के ठीक होते ही हालत सुधर जायगी। १९४३ ई० अग्निकाण्डों, भूकंपों, विस्फोटों, सम्पति और जीवन के विनाश के लिये प्रसिद्ध होगा। मङ्गल के सेनापति होने से लड़ाई का जोर रहेगा। फलतः आदमी बड़ी तादाद में मरेंगे। दुर्भिक्ष और बीमारी से भी लाखों आदमी मरेंगे। जनता उत्तेजित रहेगी और मजदूरों के झगड़े दुनियां भर में जोरों पर होंगे। अराजकता का सर्वत्र राज्य रहेगा और शान्त और गंभीर विचारों और सलाहों का निरादर होगा। जंगलों, पुराने किलेबन्दियों और रण-क्षेत्रों में प्राणों की महान् बलि दी जायेंगी। दुर्भिक्ष से नागरिक लोग ऊब उठेंगे और भारी मुसीबतें उठायेंगे। बड़ी-बड़ी व्यापारिक फर्में दिवालिया हो जायेंगी और उनका नाम भी मिट जायेगा।

भारत में।

भारत में अराजकता फैलेगी। राजनीतिक अवस्था अस्थिर रहेगी। प्रभावशाली लोगों द्वारा राजनीतिक गति अवरोध दूर करने के लिये प्रयास किए जावेंगे, मगर उनकी सफलता की आशा बहुत कम है। बृहस्पति के कर्क में प्रविष्ट होने के साथ भारत की हालत कुछ सुधर जायगी और शायद राष्ट्रीय नेता जेलों से छूट जावें। गम्भीर, नाजुक स्थितियों में से कुछ वास्तविक सत्ता मिल जायगी। पाकिस्तान की आवाज और अधिक बुलन्द होगी, लेकिन कभी भी अस्तित्व में आयगा।

पनडुब्बियों का उपद्रव।

इग्लैण्ड में लोग अधिक आशावान होंगे और अंग्रेज़ अपनी वीरता और धीरता से शत्रुओं पर विजयी होंगे। अटलांटिक में पनडुब्बियों का उपद्रव बढ़ेगा। यूरोप भूखण्ड में बीमारी, अकाल और सख्त सर्दी का जोर रहेगा। जर्मनी, इटली और नाजी अधिकृत देशों मे व्यापक गृह-युद्धों के होने की सम्भावना है। जर्मनी के लिये यह साल निश्चित रूप से खराब है। जर्मन सेना को भारी क्षति पहुंचेगी। हिटलर का भाग्य सूर्य अस्त हो जायगा।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका में व्यापक छल-कपट और षड्यन्त्र आदि का राज्य रहेगा। खोये अड्डों और देशों को पुनः लेकर मित्र राष्ट्र विजय लाभ करेंगे।

रूस का भविष्य।

रूस के लिए यह साल अच्छा है। केवल दूसरी तिमाही में कुछ खराब समय उसका आगया। रूसी फौजें बहुत बहादुरी दिखावेंगी। सम्भव है कि रूस को दो-दो मोर्चों पर लड़ना पड़े। मगर वह हमलावरों को पराजित कर देगा।

चीन और भारत।

चीन जापानी आक्रमण को रोकेगा। चीन भारतीय मामलों में अधिक दिलचस्पी लेगा। यह भी सम्भव है कि इन दोनों देशों में और घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित होकर किसी किस्म की मैत्री हो जाय। संयुक्त राज्य से मदद अधिक मिलेगी।

जापान।

जापान पर जोरों की बम-वर्षा होगी। जापान की महत्वाकांक्षाओं पर तुषारपात होगा। साइबेरिया में जापान की लड़ाई सम्भव है। जापान में नाटकीय घटनायें घटेंगी और इनका भविष्य के अगले बहुत सालों पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा।

निर्णयात्मक।

इससे ख्याल है कि लड़ाई इस साल निर्णयात्मक रुख पकड़ेगी और नतीजा मित्र राष्ट्रों के पक्ष में होगा। एक से अधिक निर्णयात्मक लड़ाइयां होंगी और मित्रों की प्रभुता स्थापित होगी तथा वृहस्पति के कर्क छोड़ते ही युद्ध ग्रस्त संसार में शान्ति के आसार दिखाई देंगे।

-हिंदुस्तान से]

अनेकता में एकता।

(पी. जगन्नाथ राव नाइडू, नागपुर)

एक बढ़िया इत्र अनेक रंग रूप और आकार प्रकार की शीशियों में भरा हुआ है लेकिन देखने वालों में से किसी को कोई शीशी पसंद आती है और किसी को कोई। जिसे जो शीशी सुहावनी मालूम पड़ती है वह उसे खरीद लेता है। यहाँ तक तो सब ठीक है। इसके आगे बढ़कर वे ग्राहक जब शीशियों के आकर प्रकार की आलोचना शुरू करते हैं। अपनी अपनी शीशी की सब प्रशंसा करते हैं और उसकी खूब सूरती को बखानते हैं यहाँ तक भी किसी हद तक ठीक ही है।

परन्तु उस मूर्खता के लिए क्या कहा जाय, जब इत्र खरीदने वाले, एक दूसरे की शीशी को बुरा बताने पर उतर आते हैं। भर पेट निन्दा करते हैं और अपनी शीशी की अन्धभक्ति में दूसरे की को तोड़ फोड़ डालने के लिए उद्यत होजाते हैं। जब एक सम्प्रदाय दूसरेसे झगड़ताहै तब प्रतीत होता है कि वे लोग सम्प्रदाय का वास्तविक तात्पर्य ही नहीं समझते। सभी धर्मों के मूल में एक ही महान सत्य विराजमान है। फिर लड़ाई झगड़े का क्या काम? शीशियाँ अपनी अपनी रुचि की पसंद की जा सकतीं हैं, सम्प्रदाय अपनी इच्छानुसार रखे जा सकते हैं परन्तु यह न भूल जाना चाहिए सब के अन्दर एक ही इत्र भरा हुआ है। मजहबों में जो फर्क दिखाई पड़ता है वह उनके बाहरी आवरण का है भीतर तो सब में एकताहै। यदि इस मर्म को लोग समझ लें तो सम्प्रदायिक कलहों का अन्त होने में देर न लगे।

महात्मा जी के गुप्त वचन।

(पं० चुन्नीलाल जी राजपुरोहित, सीहोड़)

—:०:—

कुछ दिन पूर्व मैं तीर्थ यात्रा के लिये गया था। काशी आदि तीर्थों में होता हुआ अयोध्या पुरी पहुंचा। भगवान राम की जन्म भूमि के दर्शनों का पुण्य फल लाभ करने के उपरान्त हम लोग वहाँ से लखनऊ आये। चार बाग से आगे चल कर एक सीतापुर जिला निवासी सज्जन से भेंट हुई। रास्ता चलते उनसे वार्तालाप छिड़ गया। परिचय पूछने पर मालूम हुआ कि उनका नाम रामामल तिवारी है और वे तामसेन गंज के रहने वाले हैं। साधु संन्यासियों के प्रसंग में चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि यहाँ से ५ मील दूर बादशाह नगर के पास हनुमान गढ़ी है। वहाँ कई साधु ऐसे हैं जो सदैव खड़े रहते हैं कभी बैठते नहीं। हमारी प्रबल उत्कंठा उनके दर्शन की हुई और हनुमान गढ़ी के लिए चल दिये।

लेखर्क—

मध्यान्ह काल में हम लोग वहां पहुंचे और कई महात्माओं के दर्शन करके अपने भाग्य को सराहा। वहां एक बड़ी विचित्र घटना घटी वह यह कि एक महात्मा जी जिनके हम दर्शन कर रहे थे। देखते देखते हमारी आंखों के सामने अन्तर्धान होगये। हमारी उत्सुकता बढ़ी और आश्चर्य चकित होकर वहीं बैठ गये कि इसका रहस्य जाने बिना यहां से न जायेंगे। लौटना तो हमें उस दिन था पर अब तो ठहरना ही तय हुआ। दिन के १० बजे से रात के ६ बजे से उसी स्थान पर इस आशा से बैठे रहे कि उन महात्मा जी के फिर दर्शन करके ही यहां से उठेंगे।

जब रात्रि हुई ६ बजे तो वे अचानक उसी स्थान पर हमारी आंखों के सामने फिर प्रकट होगये। उन्होंने पूछा—"क्यों तुम लोग यहां क्यों बैठे हो, दर्शन कर चुके ये फिर यहां रहने का क्या कारण है, जाओ यहां से चले जाओ।" हमने उनके चरण पकड़ लिये और कहा भगवन्, आप शंकर रूप हैं। हमें कुछ उपदेश दीजिए जिससे अपने जीवन को सफल बना सकें। उन्होंने कृपा पूर्वक कई बातें हमें बताईं जो सर्व साधारण के सामने प्रकट करने की नहीं हैं। 'अखण्ड ज्योति' सम्पादक की जो प्रशंसा की उसके बारे में हम प्रकट करना नहीं चाहते उन बातों में सर्व साधारण के काम की एक ही बात थी वह यह कि भविष्य में नाना प्रकार की विपत्तियाँ मनुष्य जाति पर आवेंगी। जन संख्या बहुत घट जायगी। सम्वत् २००० तक बहुत ही कष्ट संसार को रहेंगे। इसके पश्चात् अच्छे समय का आगमन आरंभ होजायगा। धीरे धीरे जमाना पलटेगा। पाप घटेगा और पुण्य बढ़ेगा। कुछ वर्षों में इतना परिवर्तन होजायगा कि सतयुग जैसा बर्तने लगेगा। सब लोग सुख शान्ति का जीवन व्यतीत करेंगे।

दूसरे दिन मैं वहां से चला आया उन महात्माजी के वचनों पर मुझे पूर्ण श्रद्धा है। उसी दिन से मैंने अखण्ड ज्योति का पता तलाश करके पत्रालाप करना आरम्भ कर दिया और सत्य ज्ञान को प्राप्त करने लगा। अब मुझे यह पूर्ण विश्वास होगया है कि निकट भविष्य में पापों का अन्त होकर पुण्य की प्रचुरता होगी।

कष्ट दान का उद्देश्य।

(लेखक—श्री० रामदयालजी गुप्त, कोसीकलाँ)

मिथला का राजा चित्रदत्त बड़ा धर्मात्मा था उसकी इच्छा रहती थी कि प्रजा में सदैव धर्म भावनाऐं जागृत रहें, सब लोग धर्म कर्म में प्रवृत्त रहें। लेकिन प्रजा की दशा उस समय राजा की इच्छा के विपरीत थी। लोग चोरी, जारी, छल, कपट, अनीति अन्याय का आचरण करने में अधिक रुचि लेने लगे। चारों ओर पाखण्ड और असत्य का प्रचार बढ़ने लगा।

अपनी प्रजा के ऐसे आचरण देखकर राजा को बड़ा दुख हुआ। उसने सोचा कोई ऐसा उपाय करना चाहिये कि लोक में फैली हुई पाप प्रवृत्ति मिट जाय और लोग धर्माचरण करते हुए सुख शांति का जीवन व्यतीत करें। राजा ने अपने प्रमुख अधिकारियों को बुलाया और उनकी सलाह से एक गुप्त मन्त्रणा तैयार करली।

दूसरे दिन राजा ने हुक्म दिया कि प्रजा के घरों में आग लगवा दी जाय। आज्ञा पाते ही सिपाही दौड़े और अनेक स्थानों पर आग लगादी गई। अग्नि की लपटें आकाश को छूने लगीं। शहर नगर और गाँवों में प्रलय के दृश्य उपस्थित होने लगा। चारों ओर हाहाकार मच गया प्रजा के बहुत से लोग एकत्रित होकर राजा के पास पुकार करने गये कि—"महाराज यह क्या हो रहा है? हमें इस प्रकार क्यों सताया जा रहा है?"

जो लोग पुकार करने गये थे राजा ने उन सबको पकड़वा कर जेल में बन्द करवा दिया और घोषित कर दिया कि कुछ दिन बाद इन्हें कोल्हू में पिलवा दिया जायगा। इस भयंकर दण्ड को सुनकर प्रजा में त्राहि त्राहि मच गई सब लोग ईश्वर को आर्त स्वर से पुकारने लगे। दुख में ऐसा गुण है कि उसके प्रभाव से अनायास ही मनुष्य ईश्वर को याद करता है और धर्म को संभालता है। सब जगह ईश्वर की पुकार होने लगी। अधर्म अनीति के कार्य बन्द हो गये। दुख पड़ने पर शैतानी करना लोग भूल जाते हैं।

राजा को यह सब पता लगा। उसे मनही मन बहुत सन्तोष हुआ। दूसरे दिन उसने यह घोषणा की कि ईश्वर ने मुझे स्वप्न में आदेश दिया है कि ६ महीने तक आग लगवाना और कोल्हू में पेलना स्थगित रखूं। इसलिये अब पकड़े हुए कैदियों को ६ महीने बाद मरवाया जायगा और तभी अग्नि-काण्ड कराये जाँयगे।

प्रजा ने एक सन्तोष की साँस ली। ६ महीने का समय मिला था। इस समय को लोगों ने धर्म कर्मों द्वारा ईश्वर को प्रसन्न करने की तैयारियाँ कीं। क्योंकि राजा के कोप से ६ महीने के लिए ईश्वर ने ही बचाया है और उसी की कृपा से आगे भी संकट टल सकता है। घर घर में भजन कीर्तन, पुण्य-दान, यज्ञ-तप होने लगे। अधर्मी प्रजा विपत्ति एक ही ठोकर से धर्म की ओर मुड़ पड़ी।

६ महीने पूरे हुए। सब लोग नई घोषणा की प्रतीक्षा में थे। नियत समय पर राजा ने सन्देश दिया कि ईश्वर ने अब ६ महीने का समय और देने को कहा है। अब ६ मास पश्चात् सारे देश को उजड़वाऊंगा और तभी कत्ले आम होगा। प्रजा ने सन्तोष की साँस ली। आशा की सुनहरी किरणें दिखाई देने लगीं, सम्भव है ईश्वर की कृपा से यह संकट सदा के लिए टल जाय। इस आशा से अधिक ईश्वर भजन और अधिक धर्माचरण होने लगा।

पूरे एक वर्ष तक भयग्रस्त जनता ने धर्माचरण की ओर विशेष ध्यान दिया जाय। जिससे वैसे उत्तम कर्मों की स्वभावतः आदत पड़ गई, बुरे कर्म करना छूट गया। राजा ने प्रजा को धर्मरत देखा तो उसे बहुत प्रसन्नता हुई। वर्ष के अन्त में उसने प्रजा को बुलाकर कहा—"तुम लोगों को असत् मार्ग से हटा कर सन्मार्ग पर लगाने को यह त्रास दिया गया था। अवश्य ही इससे बहुत कष्ट उठाना पड़ा, परन्तु आगे

कथा—

पितृ-श्राद्ध ।

राजा सगर के सौ पुत्र अपने दुष्कर्मों के कारण कपिल मुनि के कोप भाजन होकर जलकर भस्म हो गये और पाप परिणाम से नरक की दुखद यन्त्रणाऐं सहने लगे।

इन सौ नरकगामी राजकुमारों के भाई अंशुमान राजगद्दी पर बैठे पर वे सदैव इस चिंता में जलते रहे कि किस प्रकार अपने भाइयों का उद्धार करें। अंशुमान के पुत्र दिलीप भी अपने पित ऋण को भुला न सका। उसने पितरों के उद्धार के निमित्त घोर तपस्या की पर सफल मनोरथ न हो सका। दिलीप का पुत्र भागीरथ भी चुप न बैठा, पुरखों का उद्धार करना, उनके किये हुए पाप का प्रतिशोध करना आवश्यक था। अपने पूर्वजों की कलङ्क कालिमा को धोये बिना कोई सपूत कैसे चैन पा सकता है।

बताया गया था कि सगर के सौ पुत्रों ने पृथ्वी पर जो पाप का बीज बोया है इसका कलंक तब छूट सकता है जब इस संसार पर भगवती गङ्गाजी लाई जाँय। जिनके शीतल जल से उजाड़खण्ड हरे हो जाँय और प्यासे प्राणियों के सूखे कंठों को शीतलता प्राप्त हो। अभाव की पूर्ति का यही उपाय है कि जितनी हानि पूर्व काल में हो चुकी है उतना ही लाभ पहुँचा दिया जाय। पितरों के उद्धार का यही रास्ता है कि उनसे दुनियां का जो अपकार बन पड़ा हो वह सब पाई पाई चुका दिया जाय।

भागीरथ के हृदय में सच्चा पितृ प्रेम था, वे पितरों का श्राद्ध करके उनकी परलोकस्थ आत्माओं को शान्ति लाभ करना चाहते थे इस लिए सुख वैभव छोड़कर शक्ति सम्पादनार्थ वे घोर तप करने लगे। तप में; संयम में, एकाग्रता में, लगन में, शक्ति का सारा केन्द्र छिपा हुआ है। यह भागीरथ ने जाना और एक महान् कार्य को पूरा करने की तैयारी के लिए तप में प्रवृत्त होगये। तप के बाद उनका पौरुष जागा और वे देवताओं की सहायता से भू-मण्डल पर गङ्गा जी को ले आये।

गङ्गा के आने से संसार का बड़ा उपकार हुआ। सगर सुतों द्वारा दुनियाँ में जितना अधर्म हुआ था उससे अधिक भगीरथ का धर्म हुआ। पितामहों के दुष्कर्म का परिमार्जन पौत्र के कार्यों द्वारा होगया। पितरों की आत्माओं को स्वर्ग में शांति मिली, उनकी आन्तरिक जलन बन्द होगई, कुम्भीपाक की—आत्म-वेदना की—कोठरी में घुटता हुआ जी सुस्थिरता अनुभव करने लगा सच्चे पिंडोदक पाकर पितरों की आत्मायें आशीर्वाद देने लगीं।

पूर्वजों की भूलों के परिणाम आज हमारा देश शैतान द्वारा पद दलित हो रहा है, पितृओं के कुविचारों के कारण हमारी समाज में नाना प्रकार के भ्रम पाखण्ड घुस पड़े हैं जिनके पाप से आज हमारी जाति असंख्य कष्ट कठिनाइयों का अनुभव कर रही। परलोकस्थ पितृ अपनी संतति की ओर दृष्टि लगाये बैठे हैं कि कोई भागीरथ उपजें और देश जाति में सुव्यवस्था उत्पन्न करके हमें पिण्डोदक प्रदान करें। चिन्ह पूजा करने वाले गोवर गणेश तो बहुत हैं पर सच्चा श्राद्ध करके पितृओं की अन्तरात्मा को शांति देने वाले भागीरथ दीख नहीं पड़ते।

उस कष्ट की अपेक्षा अनेक गुना लाभ भी तुम्हें प्राप्त होगा। पिछले वर्ष अग्नि काण्ड में जिसका जितना नुकसान हुआ था वह सब राज्य के खजाने से भरपाई कर ले जावें। और जेल में पड़े हुए लोग अपना हर्जाना लेते हुए घर जावें।

प्रजा कुछ समय कष्ट में रही पर अन्त में उसे अपार लाभ हुआ। अधर्म के विष से पीछा छुड़ाकर धर्म का कल्पवृक्ष पाया। आज हमारे ऊपर विपत्तियाँ आई हुई हैं हो सकता है कि सम्राटों का सम्राट् अपनी प्राणप्रिय प्रजा को धर्मात्मा और सुखी बनाने के लिये ही यह प्रपंच रच रहा हो।

८। —

ईश्वर प्राप्ति का सरल उपाय

(पं० राधेमोहन जी मिश्र बहराइच)

सरयू तट पर विराजमान स्वामी ओमानंद जी के समीप किसी गाँव का रामलाल नामक एक व्यक्ति आया। उसने स्वामी जी से कर बद्ध प्रार्थना करते हुए कहा कि मुझे भी कुछ उपदेश कीजिये कि ईश्वर के दर्शन पा सकूं स्वामी जी ने रामलाल से कहा— " ओ रामलाल! कृष्ण भगवान् का ध्यान इस प्रकार करो कि भगवान् कृष्ण पलथी मारे बांसुरी हाथ में लिये हुये तुम्हारे हृदय कमल में बैठे हुए हैं, यह ध्यान करते हुये " ॐ नमो भगवते वासुदेवाय " मन्त्र का मनमें जप करो।" रामलाल ने कहा गुरूजी मैं मस्तक शून्य हूं यह ध्यान मैं नहीं कर सकता और यह मन्त्र इतना बड़ा है जप भी मेरे लिये कठिन है। स्वामी जी ने कहा अच्छा घबड़ाओ नहीं। मैं तुमको एक और सरल मार्ग बता रहा हूं सुनो ' पद्मासन पर बैठकर भगवान कृष्ण की पीतल की मूर्ति लेकर अपने सामने रखकर उसी के प्रत्येक अंग को देखना और किसी ओर न देखना फिर नेत्रों बन्द करके उसी का अनुभव करना। रामलाल ने स्वामी जी के पैरों को पड़कर कहा कि महाराज मैं इस आसन पर इतनी देर बैठकर ध्यान नहीं कर सकता, क्योंकि बैठने में बड़ा कष्ट होगा। यदि मैं अपने कष्ट का ध्यान करूं तो मूर्ति का ध्यान नहीं हो सकेगा। गुरू महाराज कोई इससे सरल उपाय बतलाने की कृपा कीजिये। स्वामी जी ने कहा कि अपने पिता के चित्र को सामने रखकर एकाग्र चित्त से देखिये। स्वामी जी आगे का और वाक्य पूर्ण भी न करने पाये थे कि वह बोल उठा कि स्वामी जी पिता का ध्यान मुझसे नहीं हो सकता, क्योंकि वो मुझे बहुत पीटते थे। मैं उनसे बहुत डरता था। यदि कहीं स्वप्न में भी देख लेता हूँ तो रात्रि काटना कठिन तर हो जाता है मेरे पैर कांपने लगते हैं प्रभू! कोई सरल उपाय बताइये जिसको मैं कर सकूं। स्वामी जी कुछ विचार कर थोड़ी देर पश्चात् बोले कि रामलाल! अच्छा, यह बतलाओ कि तुमको कौन वस्तु सबसे प्रिय लगती है। वह बोला कि भैंस, क्योंकि उससे दूध-मक्खन तथा घी बहुत खाया है और यह मेरे आँखों के सामने नाचती रहती है। स्वामी ने कहा कि तुम उस कोठरी में जाओ और दरवाजा बन्द करके बैठ जाओ और उसी भैंस का ध्यान करो और किसी अन्य बात को न सोचना। वह बड़ा प्रसन्न हुआ और स्वामी जी की आज्ञानुसार कार्य आरम्भ कर दिया।

तीन दिन बीत गये खाना पीना छोड़कर उसी ध्यान में लीन होगया। एक दिन स्वामी जी उसे ध्यान मग्न देखकर पुकारा " ओ रामलाल बाहर आओ कैसी दशा है? रामलाल ने कहा कि मैं कैसे बाहर आऊं मेरे तो बड़े बड़े सींगें हैं मैं वृहतकाय वाली भैंस होगया हूं। तब स्वामी जी समझ गये कि अब एकाग्र चित्त वाला तथा समाधि योग्य होगया। स्वामी जी ने पुनः पुकार कर कहा कि तुम भैंस नहीं हो तुम अपना ध्यान बदल दो। भैंस का नाम रूप भूल जाओ और भैंस के सत् स्वरूप सत्, चित् आनन्द का ध्यान करो यही तुम्हारा वास्तविक स्वरूप है। रामलाल ने अपना मार्ग बदलकर स्वामी जी के उपदेशानुसार चलते हुए अपने जीवन लक्ष्य मुक्ति को प्राप्त किया। इस कथा से यह तात्पर्य निकलता है कि जो वस्तु प्रिय हो उसी का ध्यान करते हुए आगे बढ़ना चाहिये न कि मनको बलात् खींचकर किसी ध्यान में लगाना इससे मन टिकता नहीं है।

चिन्ता उन्मूलन प्रयोग।

[श्री० रामनरायण जी श्रीवास्तव "हृदयस्थ"]

साम्प्रत काल में प्रतिदिन उत्तरोत्तर आतंक एवं भविष्य चिन्ताओं का बाहुल्य बढ़ रहा है। मुमुक्षु तथा तत्वज्ञानी महानुभावों को छोड़कर अधिकांश जन समुदाय आने वाले कल की करालता से दुखी है। इस मानसिक व्यथा का सफल उपचार दिव्य विभूतियों द्वारा पाकर भद्र पाठकों के समक्ष अनुभव की कसौटी पर कसने के लिये रखने का साहस करता हूं, विश्वास है कि इससे हार्दिक शांति और अपूर्वानन्द की प्राप्ती होगी

सूर्योदय से अनुमानतः दो घड़ी प्रथम शौचादि कृत्य से निवृत्त होकर किसी सुखकर एवं सुसाध्य आसन पर स्वस्थ बैठ जाइये. रीढ़ को जिसे सुषुम्ना नाड़ी का स्थान मानते हैं सीधी रखते हुए नेत्र बन्द करके मन ही मन (शब्दों से नहीं) ईश्वर के प्रति निम्न लिखित प्रार्थना यानी मूक चिंतवन कीजिये।

"हे परम पिता आप सर्व शक्तिवान तथा अन्तर्यामी हो, दया सागर होकर अपने प्रिय पुत्रों को मनचाही वस्तु देने वाले हो। हमें सद् ज्ञान दीजिये! गीता आदि सत् शास्त्रों का आदेश है कि यह विश्व तुम्हारी लीला मात्र है। इसका सञ्चालन तुम्हारे भ्रकुटी विलास मात्र पर निर्भर है आपकी इच्छा के बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता। अस्तु! हम विश्वास करते हैं कि हमारी प्रत्येक क्रियाओं में आपकी इच्छाओं का समावेश है। अतएव हे परम पिता हमें सद ज्ञान दीजिये! ताकि उचित कर्तव्य कर्म करते हुए, जीवन लक्ष्य की पूर्ति के लिये सजग रहकर शांतिमय जीवन बितावें।"

उपरोक्त प्रार्थना के अनन्तर "हरे राम २" मन्त्र से एक माला (१०८) जप करें (हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे) पश्चात् स्वात्मा का अनुभव करते हुए मूक चितवन द्वारा यह भावना करें कि "मैं पवित्र अविनाशी और निर्लिप्त आत्मा हूं यह शरीर तो आवरण मात्र है इसके नाश होने पर मेरी मृत्यु नहीं होती। मैं संसार की समस्त नाशवान वस्तुओं से सर्वथा अलग हूं और उस परब्रह्म परमात्मा का अमर पुत्र हूँ:- (आगे का श्लोक स्पष्ट उच्चारण करें) यस्य नाम्नैव नश्यंति खेदा दं हरिं नेति गायन्ति वेदाः। श्री विराऽव्यय करालं नामि वंशीधरं नन्दबालम्॥"

× × ×

बन्धुवरो! इस प्रयोग साधन में आपको बीस मिनट से अधिक नहीं लगेंगे। इससे आपके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में क्या चमत्कारिक परिवर्तन होगा वह लिखने का नहीं, किंतु अनुभव का विषय है।

महामना मालवीय जी की—

❀ भविष्य-वाणी ❀

ता० २ जनवरी को महामना मदनमोहन जी मालवीय ने भविष्यवाणी की है कि "वर्तमान महायुद्ध अभी डेढ़ वर्ष तक और चलेगा और अन्त में मित्र राष्ट्र विजयी होंगे।"

कथा—

वाहु-बल और ब्रह्म बल।

द्वापर के आरम्भ में ब्रह्मवर्त देश में दंभोद्भव नामक एक प्रतापी राजा हुआ। वह बड़ा ही बलवान और तेजस्वी था। शारीरिक बल में वह ऐसा अद्वितीय था कि दूर-दूर उसके समान योद्धा दिखाई न पड़ता, जिसे लड़ने के लिये ललकारता वही भयभीत हो जाता और गिड़गिड़ा कर क्षमा माँग लेता।

जब तक ऊँट पहाड़ के नीचे होकर नहीं निकलता तब तक उसे पता नहीं चलता कि मुझसे भी कोई बड़ी चीज़ इस दुनियाँ में मौजूद है। वाहु-बल के अभिमान में उन्मत्त हो कर दंभोद्भव चारों दिशाओं में बिगड़े हुए हाथी की तरह दौड़ने लगा। जहां जाता वहीं यह घोषणा करता कि यदि पृथ्वी पर कोई योद्धा शेष है तो मुझसे लड़ने के लिए आगे आवे।

एक नगर में वह ऐसी ही विज्ञप्ति कर रहा था, कि एक वृद्ध विद्वान् अपने श्वेत केशों को बखेरे हुए राजा के सन्मुख पहुँचा। उसने नम्रता-पूर्वक कहा—राजन्! आपको पराक्रम प्राप्त हुआ है, इसके लिये ईश्वर को धन्यवाद कीजिये, पर ऐसे अभिमान भरे बचन मत लिये, कि मेरे समान इस पृथ्वी पर कोई नहीं है। आप नहीं जानते तो भी यह वसुन्धरा वीर बिहीन नहीं है, इस पर एक से एक प्रतापी और शक्तिशाली मनुष्य पड़े हुए हैं।

वृद्ध की बातें सुनकर राजा को बड़ा क्रोध आया। उसने तड़क कर कहा—यदि कोई मेरे समान योद्धा है तो बताओ वह कहाँ है, यदि न बताओगे तो तुम्हें ही मुझसे लड़ना पड़ेगा और अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा।

राजा के दर्प पर हँसते हुए उस वृद्ध विद्वान् ने कहा—मरने की तो मुझे कुछ चिंता नहीं है, पर तुम्हारी इच्छा पूर्ण करने के लिये मैं एक व्यक्ति को बताये देता हूँ, वह तुमसे युद्ध कर लेगा। गंध मादन पर्वत पर चले जाओ वहां नर-नारायण ऋषि तपस्या कर रहे हैं, वे तुम्हारी युद्ध की मनोकामना पूर्ण कर देंगे।

राजा गन्ध मादन पर्वत की ओर चल दिया। बहुत ढूंढ़ने पर वहां एक अस्थि-पिंजर मनुष्य तप करता हुआ पाया। राजा ने पूछा—'आप ही नर-नारायण हैं' क्या? यदि हैं तो मैं आपसे लड़ने आया हूं। ऋषि ने दम्भोद्भव को स्नेह पूर्वक पास बिठाया और सिर पर हाथ फिराते हुए कहा—बेटा! तू निसन्देह अजेय है। शरीर में कितना बल है, यह तो एक मामूली सी बीमारी में नष्ट हो सकता है। इस लिये वाहु-बल के लिये गर्व करना व्यर्थ है। तू हमारा उपदेश मान और अपने नगर को लौट जा। शारीरिक बल को आजमाने की मूर्खता करने से क्या लाभ?

ऋषि ने बहुत उपदेश दिया पर राजा की समझ में एक भी बात न आई। वह घमंड में चूर होकर बार-बार लड़ने के लिये ही ललकारने लगा। जब किसी तरह न माना तो नर-नारायण ने कहा—अच्छा राजा! अब तू लड़ने को तैयार होजा। राजा उठ कर खड़ा होगया। ऋषि ने पास में पड़े हुए एक तिनके को उठाया और उसमें प्राण शक्ति फूंक कर उसे योद्धा बना दिया। राजा उस मंत्र प्रेरित तिनके से लड़ने लगा, परन्तु कुछ ही देर में उसका दम फूल गया और परास्त होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। पागल बनाने वाला अभिमान क्षण भर में कपूर की तरह उड़ गया।

वही वृद्ध विद्वान् इस अवसर पर पुनः आ उपस्थित हुआ, उसने कहा—बेटा दम्भोद्भव! तुमने देखा कि वाहु-बल और ब्रह्म-बल में कौन

अधिक बलवान् है ? शरीर, धन आदि के भौतिक बल बहुत ही अपूर्ण अस्थिर और नाशवान है, किंतु ब्रह्मबल की तो थोड़ी सी किरणें पाकर भी एक तिनका अद्भुत शक्तिशाली बन सकता है। इस लिए हे राजन्! यदि तुम सच्चा बल प्राप्त करना चाहते हो तो बाहु बल का अभिमान छोड़कर ब्रह्म बल संचय करो।

राजा को अपनी मूर्खता समझ में आगई। वह अभिमान छोड़कर नारायण शिष्यता में ब्रह्म बल प्राप्त करने के लिए तप करने लगा।

कथा—

ग़रीबों के हक़ की छाती पर।

अरब देश अच्छे घोड़ों के लिए प्रसिद्ध है। वहाँ नबोर नामक व्यक्ति के पास बहुत बढ़िया घोड़ा था, ऐसा घोड़ा उस समय दूर दूर तक दिखाई न पड़ता था।

नबोर के नगर में उसका एक दूसरा प्रतिद्वन्दी दहेर नामक अमीर रहता था। उसकी बड़ी इच्छा थी कि किसी प्रकार नबोर का घोड़ा मेरे हाथ लग जाय। दहेर ने उस घोड़े की काफ़ी क़ीमत लगादी और नबोर को कई लालच दिये तथा धमकाया भी पर नबोर किसी प्रकार अपना घोड़ा देने के लिए रजामन्द न हुआ।

जब सारे उपाय निष्फल होगये तो दहेर ने एक चाल चली। वह बीमार परदेशी का रूप बनाकर उस रास्ते के किनारे पड़ रहा जहाँ से अक्सर मुँह अन्धेरे नबोर निकला करता था। दहेर ने सोचा नबोर अत्यन्त दयालु है, उसे इसी प्रकार छला जा सकता है।

नित्य की भांति नबोर मुँह अन्धेरे जब उस रास्ते से निकला तो दहेर ने बीमार का जैसा बड़ा दर्दमन्द स्वर बनाकर पुकारा—"भाई घुड़सवार, मिहरबानी करके मुझे शहर तक पहुँचादो, मैं परदेशी हूं, बीमार हूं, कमज़ोरी के मारे मुझसे उठा भी नहीं जाता, तुम मेरी मदद न करोगे तो यहीं पड़ा पड़ा मर जाऊँगा।"

नबोर का दयालु हृदय पिघल गया। वह घोड़े से उतरा और बीमार को उठाकर अपने घोड़े पर बिठा दिया और खुद पैदल चलने लगा। कुछ ही क़दम चले थे कि उस छद्म वेष धारी दहेर ने घोड़े को एड़ लगाई और लगाम का झटका देकर आगे बढ़ा दिया। अब नबोर की आँखें खुलीं। उसने देखा कि दहेर ने मुझे धोखा दिया और इस प्रकार चाल चलकर मेरा घोड़ा छीन लिया।

दहेर घोड़े को बढ़ाने लगा। नबोर ने कहा-दहेर, तुम घोड़ा ले चुके, अब इसे छीन सकना मेरे लिए कठिन है। पर जरा ठहरो, मेरी एक बात सुनते जाओ। दहेर ने कुछ दूर पर घोड़ा खड़ा कर लिया और कहा-जो कहना है जल्दी कहो। नबोर ने कहा—'देखो, किसी से इस बात का जिक्र न करना कि तुमने किस छल से मेरा घोड़ा लिया। क्योंकि यदि कोई आदमी सचमुच बीमार या पीड़ित हुआ तो लोग उसे धोखेबाज समझकर उसकी सहायता न करेंगे। इससे बेचारे दर्दमन्दों का हक छिन जाया और उन्हें बहुत दुख उठाना पड़ा करेगा।"

दहेर की अन्तरात्मा रो पड़ी। उसने कहा-ग़रीबों का हक़ छीनकर घोड़ा लेना मुझे मन्ज़ूर नहीं है। वह ज़ीन पर से उतर पड़ा और घोड़े की लगाम नबोर के हाथ में देते हुए कहा—भाई आज से आपको गुरु मानता हूँ, आपने मेरी आँखें खोलदीं, मैं समझ गया कि दूसरे की वस्तु लेना बुरा है पर ग़रीबों के हक़ की छाती पर खड़ा होकर कुछ लेना और भी बुरा है मैं भविष्य में ऐसा न करूंगा।

नबोर ने दहेर को छाती से लगा लिया और अपना घोड़ा उसे पुरस्कार में दे दिया।

वर्तमान संकट में हमारा कर्तव्य ।

विश्व व्यापी महायुद्ध से उत्पन्न हुई परिस्थितियों के कारण चारों ओर बेचैनी फैली हुई है। घबराहट, भय और आशंका से लोगों के हृदय बड़े व्याकुल हो रहे हैं। कईयों को रात भर नींद नहीं आती और सोचते रहते हैं कि क्या करें कहां जावें ? इस संकट के समय से उन्हें किसी महत्व पूर्ण बात का स्मरण नहीं आता वे केवल शरीर बचाने, परिवार बचाने और धन बचाने की चिन्ता करते हैं। भगदड़ ही एक मात्र उपाय दिखाई देता है। हम देखते हैं कि गांव वाले शहरों को भाग रहे हैं और शहर वालों के माल असबाब गांवों के लिए लद रहे है। ग्रामीण धनवान समझते हैं कि लुटेरे उन्हें लूट लेंगे। चोर डाकू उनकी सम्पति का हरण कर ले जावेंगे। शहर वालों का ख्याल है कि आक्रमण शहरों पर होने के कारण वहां उनकी सुरक्षा नहीं हो सकेगी। वास्तव में यह भगदड़ मृग तृष्णा के समान है जिसका परिणाम असफलता के सिवाय और कुछ न होगा। कहते हैं कि भाड़ में ठंडा कहीं नहीं। जिस बन में चारों ओर दावानल जल रहा है उसमें बचने के लिए यहां वहां आश्रय ढूंढना व्यर्थ है। क्योंकि राष्ट्रीय विपत्ति के समय न तो शहर सुरक्षित हैं और न गांव। भगदड़ में सिवाय खतरे के और कुछ नहीं है। रोगी निर्बल और बच्चों को कम खतरे के स्थानों में रखना उचित है, परन्तु यह समझ में नहीं आता कि जवान, तन्दुरुस्त और जीवित मनुष्य क्यों व्याकुल होते हैं।

विपत्ति के समय धैर्य खो देना या कर्त्तव्य क्षेत्र को छोड़ कर घुड दौड़ लगाना संकट को और अधिक पेचीदा कर देना है। सुविधा जनक प्रबन्ध कर लेना और पहले ही से सावधान होजाना कोई बुरी बात नहीं है, परन्तु धैर्य गंवा कर दिन रात चिन्ता में जलना और भय एवं आशंका से बेत की तरह कांपते रहना बहुत ही अनुचित है।

शरीर और धन जैसी नश्वर वस्तुओं का असाधारण मोह करना एक प्रकार की नास्तिकता है। सत्य धर्म ऐसे मौके पर हमें धैर्य प्रदान करता है और सलाह देता है कि उचित सुरक्षा का प्रबन्ध कर लेने के अतिरिक्त भगदड़ मचाने या दूसरों को भय भीत करने का कोई कारण नहीं है।

रोग दुर्भिक्ष युद्ध, दैवी प्रकोप कोई भी संकट सामने आवें तो आप प्राणबचानेके भयसे मतभागिए। शरीर और धन की अपेक्षा कर्त्तव्य को सर्वोपरि स्थान दीजिए। जिस नगर में आपने जीविका अन्न जल आमोद प्रमोद मुद्दतों तक प्राप्त किया है उस पर विपत्ति आते ही आप छोड़ कर चल दें यह तो मनुष्यता को कलंकित करने वाला आचरण होगा। जिस नगरी से अपने पोषण पाया है आपत्ति के समय अपने को खतरे में डाल कर भी उसकी सेवा करना उचित हैं।

जिनके पास अन्यायोपार्जित धन है वे उसे शुभ कार्य में लगा दें अन्यथा तेजाब की शीशी की तरह आघात पड़ने पर वह स्वयं तो नष्ट होगा ही साथ में उसे भी ले बैठेगा जिसके पास रखा हुआ है जीवन यापन की साधारण आवश्यकताओं के अतिरिक्त जिनके पास अत्यधिक धन है उनको यह संदेश हृदयंगम कर लेना चाहिए कि उनके धन की सुरक्षा इसी में है कि अपने पड़ौसियों को संकट से बचाने में उसका सदुपयोग करें। इस प्रकार उनका पैसा नष्ट होने से बच जायगा। पवित्र भावनाओं के साथ संकट के समय सहायता में जो धन लगाया जायगा वह ज्यों का त्यों लौट आवेगा। इस लोक में और परलोक में उसका भुगतान पाई पाई से मिलेगा। सृष्टि के नियम इस बात के साक्षी हैं कि पवित्र भावनाओं के साथ जो त्याग किया जाता है उसका बीज सोगुना होकर लौटता है।

संकट के चरणों में पग पग पर सहायता की पुकार होगी धनियों को चाहिए कि इस अवसर पर धन को जमीन में

न गाड़ें वरन् अपने भाइयों की सहायता के लिए थैलियों के मुंह खोल दें। हम जानते है कि जो धनिक इन पंक्तियों को पढ़ रहें होंगे उन्हे यह उपहासास्पद, उपेक्षणीय, व्यर्थ और मूर्खता पूर्ण प्रतीत होंगी, किन्तु हम कहे देते हैं कि एक दिन उन्हें पछताते हुए इन पंक्तियों की गम्भीरता स्वीकार करनी पड़ेगी, तब उनके हाथ से स्वर्ण अवसर निकल गया होगा। सम्पन्न व्यक्ति त्यागी, उदार और अपने पड़ौसियों के प्रति सेवा भावी बन कर अपने को सुरक्षित रख कर सकते हैं अन्यथा अत्यन्त लाभिया को महात्मा गांधी के शब्दोंमें 'अपने चौकीदारों को ही जान का गाहक" होता हुआ देखने का अवसर आसकता है हमारी धनियों के लिये बारबार यह सलाह है कि आपका हित इसमें है कि अनवश्यक धन को गाढ़गाढ़ कर न रखें वरन उसका उपयोग लोक कल्याण के निमित्त करें। फिर वे उन खतरों से सर्वथा सुरक्षित रह सकते हैं जो धन के कारण उनके सिरके ऊपर हर घड़ी मंडराते रहते हैं जगत् अखण्ड है। संसार की भौतिक वस्तुऐं हमारे साथ चिपक नहीं सकती। बन्दर जब मुट्ठी को छोड़ देगा तो उसका सारा क्लेश कट जायगा।

धन को नाश से बचाने का मार्ग ऊपर बताया गया तन को बचाने का मार्ग यह है कि इसको ऐसे अवसर पर सार्थक करना चाहिए। दूर जंगलों में या छोटे गांवों में सम्भव है कोई अपने शरीर को बचाले पर ऐसा बचाव मानवोचित न कहा जायगा स्वजन बान्धवों देशवासियों, को अकेला छोड़ कर, असहाय स्त्री बच्चों, घायल, पीडितों, दुखियों, लुटते पिटते और बिलबिलाते हुए भाइयों की चीत्कारों की ओर से कान बन्द करके जो मनुष्य अपनी जान बचाने के लिये भागता है वह मनुष्यता से पतित होता है। प्लेग, इन्फ्लुऐंजा, हैजा को हमने छोटे गांवों में फैलते देखा है और एक एक दिन में बीस बीस मुर्दों को मरघट में पहुँचाया है। हट्टे कट्टे जवान बोलते चालते मौत के मुंह में जाते देखे हैं किसे पता है कि हमें कितने दिन जीना है। हो सकता है कि लड़ाई से न सही बीमारी या अन्य दुर्घटना से ही चन्द दिन में विदा तैयारी हो जाय। हिन्दू शास्त्र की मान्यता है कि जब तक ईश्वर को हमे जीवित रखना है तब तक वज्र भी नहीं मार सकता और जब आयु पूरी हो जायगी तो एक घड़ी भी बचना मुश्किल है। इन सब बातों पर विचार करने के उपरान्त एक स्वस्थ और जीवित मनुष्य का यही कर्त्तव्य ठहरता है कि वह कर्त्तव्य की पुकार को खुले कानों से सुने और अपना स्थान उन पीडितों के बीच मे बनावे जहां कि उसकी सेवाओं आवश्यकता है। भगवान् ने पुरुष को पुरुषार्थ इसीलिए दिया है कि वह शूरवीर सिपाही की तरह कर्त्तव्य क्षेत्र में डटा रहे चारो ओर भगदड़ मचाते हुए प्राण रक्षा के लिए चूहे के बिलों में स्थान तलाश करते हुए लोगों को जब हम देखते हैं तो उनकी कायरता पर बड़ा दुख होता है। एक सच्चा नागरिक, एक सच्चा मनुष्य, एक सत्यधर्म का सच्चा अनुयायी अपने पड़ौसियों से विपति में पड़ा हुआ छोड़ कर अपनी जान बचाने के लिए नामर्द की तरह छिपने के लिए नहीं भाग सकता। सत्य का आदेश है कि हे कर्त्तव्य निष्ठ आत्मा! तेरा स्थान वहां है जहा से पीडितों की चीत्कारें सेवा सहायता के लिए तेरे पौरुष का आह्वान करती हैं। आत्मा अखण्ड है इस लिए आत्मा के नाश की चिन्ता मत करो, जीवन अखण्ड है इस लिए जीवन के नाश की चिन्ता मत करो, शरीर धन आदि जड पदार्थ भी अखंड हैं इसलिए उनकी नाश का भी चिन्ता मत करो। आप पवित्र अविनाशी और निर्लिप्त आत्मा हैं फिर घबराने, डरने और चिन्तित होने का क्या काम? निर्भय रहिए निर्द्वन्द रहिए और निश्चिन्त रहिए। आज कर्तव्य आपको पुकारता है आप उसकी पुकार सुनिये और पुरुष की भांति वहां पहुँचिए जहां आपके पौरुष को चुनौती दी जा रही है जहां आपके पुरुषत्व का आह्वान किया जा रहा है।

———

'इस अंक के सम्बन्ध में'

मानव जाति पर जो वर्तमान विपत्ति आई है। उसमें संवत् २००० का एक वर्ष सब से अधिक निष्ठुर होगा ऐसी अनेक आध्यात्मिक पुरुषों की मान्यता है, लक्षणों से कुछ प्रतीत भी ऐसा ही होता है परन्तु अन्तिम निर्णय ईश्वर के हाथ है वे राई को पर्वत और पर्वत को राई कर सकते हैं। इस अंक को पढ़ कर किसी को घबराहट या बेचैनी बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है वरन् जरूरत इस बात की है कि अधिक सावधानी सतर्कता दूरदर्शिता और बुद्धिमानी से काम लिया जाय। कदाचित् अगले वर्ष युद्ध जनित कष्टों में अभिवृद्धि हो तो उसके लिये समुचित धैर्य साहस और विवेक अभी से संचय करना बुद्धिमानी की बात होगी।

कई प्रकार की भविष्यवाणियां पिछले पृष्ठों पर छपी हैं। इनकी सचाई झुटाई को भविष्य ही बतायेगा क्यों कि कई बार कई भविष्यवाणियां सच होती है तो कई गलत भी निकल जाती है। इनको सत्य मान लेने के लिए हम नहीं कहते वरन् उन भविष्य वक्ताओं की बात कहां तक सच उतरती है इसका पर्यवेक्षण करते हुए किसी निर्णय पर पहुंचना उचित समझते हैं।

युद्ध का सदा के लिए अन्त तब होगा जब मानव जाति वर्तमान कालीन अतिशय स्वार्थ परता को छोड़ कर प्रेम के धर्म मार्ग पर पीछे लौटेगी, ऐसी हमारी मान्यता है। इस सम्बन्ध में जो कुछ लिखा गया है सम्पूर्ण मानव जाति को दृष्टि में रखकर लिखा गया है। किसी खासदेश या जातिको दोषी सावित करने की हमारी इच्छा नहीं है। विपत्ति निवारण का स्थायी अस्त्र हम धर्म धारण को समझते हैं तो भी तात्कालिक भौतिक उपचार के रूप में शस्त्र युद्ध का महत्वह में स्वीकार हैं। मित्र पक्ष की धर्म विजय हो ऐसी हम ईश्वर से आकांक्षा करते हैं।

समालोचना।

श्रोमर वैश्य हितैषी—मासिक पत्र, वार्षिक मूल्य प्राप्ति स्थान पो० रगौल जि० बांदा। सम्पादक श्री लक्ष्मीनारायण जी गुप्त 'कमलेश'।

हमें भारतीय भाषाओं के सैकड़ों जातीय पत्र देखने का अवसर प्राप्त होता रहता है। यह कहने में हमें तनिक भी संकोच नहीं है कि श्रोमर वैश्य हितैषी का सम्पादक अपने ढंग का अनोखा [illegible] लेख कविता [illegible] है [illegible] चयन बड़ी योग्यता कुशलता दूरदर्शिता परिश्रम शीलता के साथ होता है। छपाई का प्रबन्ध उत्तम न होने हुए भी पत्र की आन्तरिक सुन्दरता बहुत ही महत्व पूर्ण है। जातीय पत्र निकालने वाले अपने मित्रों से हम अनुरोध करेंगे कि 'हितैषी' की एक प्रति मांगा कर उससे कुछ सीखने का प्रयत्न करें।

दो उत्तम पुस्तिकाऐं—मारुतीआरोग्य मन्दिर,जुनहड़, पो० गोरमी (गवालियार) से स्वास्थ्य चन्द्रिका और नारदीयवीणा की तान दो पुस्तिकाऐं समालोचनार्थ प्राप्त हुई है। स्वास्थ्य चन्द्रिका का मूल्य ।) है। विद्वान् लेखक आयुर्वेद भूषण श्रीरामनारायण जी वास्तव्य ने स्वास्थ्य सम्बन्धी दैनिक व्यवहार के नियमों को बड़े सुन्दर ढंग से लिखते हुए गागर में सागर भर देने का प्रयत्न किया है। दूसरी पुस्तक नारदीय वीणा की तान का मूल्य –) है। इसमें श्री० रामदास जी के भक्ति रस-सदाचार एवं उपदेश पूर्ण भजन हैं। कविता रोचक और प्रभावशाली है। पुस्तकें पाठकों के लिए उपयोगी होगीं।

पांच उपयोगी पुस्तकें—गवर्मेण्ट हाईस्कूल के रिटायर्ड हैड पण्डित पं० श्यामजी शर्मा काव्यतीर्थ ग्रामभदवर पो० कुलहरिया जि० शाहाबाद द्वारा लिखित और प्रकाशित पांच पुस्तकें हमें समालोचनार्थ प्राप्त हुई है। (१) क्या विधवा विवाह अधर्म है ? मूल्य ।) (२) वेद मे क्या है ? –)॥ (३) अलंकार दीपक ।=) (४) पिंगल दर्पण ≡) (५) श्याम सरोज सतसई ।।=) विद्वान् लेखक ने अपने विषयों को भली प्रकार लिखा है। अधिकारी लेखक का परिश्रम प्रत्यन्त अभिनन्दनीय है।